RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अक्टूबर 2024
डाक प्रेषण तिथि : 29 अक्टूबर-01 नवंबर 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 14
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 64
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

महत्तम शिखर महोत्सव

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

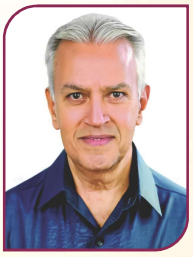

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

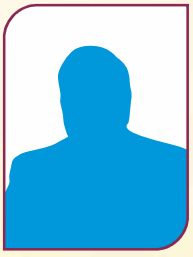

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

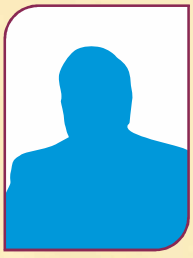

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री खूबचंद जी पारख
राजनांदगाँव
MID No. : 141590

स्व. श्री विनय जी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. : 107376

श्री शांतिलाल जी डागा
कोलकाता
MID No. : 188697

श्री प्रकाशचंद जी सूर्या
उज्जैन
MID No. : 160559

श्री उत्तमचंद जी रांका
जयपुर
MID No. : 111353

श्री रावतमल जी संचेती
गंगाशहर
MID No. : 123813

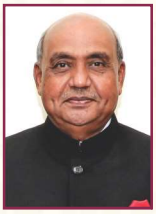

श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

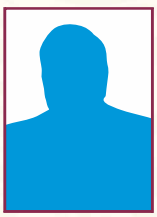

श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

चतुर्थ चरण

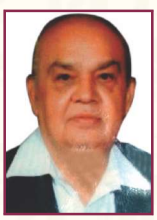

श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण ✻ श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर ✻ श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती ✻ श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली ✻ श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई ✻ श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु ✻ स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर ✻ श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा ✻ श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर ✻ श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर ✻ श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा-डोंगरगाँव ✻ श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर ✻ श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर ✻ श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद ✻ श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर ✻ श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर ✻ श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही ✻ श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई ✻ श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर ✻ श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव

द्वितीय चरण ✻ श्री तेज कुमार जी तातेड़ - इंदौर ✻ श्री पूनमचंद जी भूरा - भीलवाड़ा ✻ श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ ✻ श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर ✻ श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव ✻ श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा ✻ श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद ✻ श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर ✻ श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा ✻ श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर ✻ श्री झंवरलाल जी कुम्मट- सिलचर ✻ श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा ✻ श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई ✻ श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर- संबलपुर ✻ श्री उदयराज जी पारख-रायपुर ✻ श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई ✻ श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता ✻ श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम ✻ श्री अरुण जी मालू-कोलकाता

प्रथम चरण ✻ स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर ✻ श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव ✻ श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन ✻ श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर ✻ श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी ✻ श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता ✻ श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता ✻ गुप्त-बंगईगाँव ✻ श्री सुंदरलाल जी पींचा-गुवाहाटी ✻ श्री अमरचंद जी बैद-नोखा ✻ श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन ✻ श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई ✻ श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर ✻ श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर ✻ श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला ✻ श्री लीला देवी बंब-चेन्नई ✻ श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ ✻ श्रीमती जमना देवी लुणावत-नोखागाँव ✻ श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई ✻ श्री संजय जी मालू-कोलकाता ✻ श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। श्रमणोपासक के **अक्टूबर 2024 धार्मिक अंक** से **मार्च 2025 धार्मिक अंक** तक के सभी प्रकाशन **आचार्य भगवन् के गुणों, विशेषताओं, साधना व संयमी जीवन, संघ के प्रति आचार्य भगवन् का चिंतन, संघ समर्पणा क्यों आवश्यक, महत्तम आरोग्यम्** पर आधारित रहेंगे। उपर्युक्त विषयों पर आधारित रचनाएँ आप सभी से सादर आमंत्रित हैं। चूँकि महत्तम शिखर वर्ष गतिमान है, अत: हम सभी को महत्तम महापुरुष के गुणों का बखान कर कर्मनिर्जरा करने एवं उन गुणों को आत्मसात करने का अपूर्व अवसर उपलब्ध हुआ है। हम सभी अपने गुरु के गुणानुवाद कर इस अवसर का लाभ उठावें।

इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाओं का सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं। - श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

मुमुक्षु सुश्री निमिषा जी मांडोत

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	:	पाणेठा, जिला सूरत (गुज.)
जन्म दिनांक	:	22 अप्रैल 2000
वैराग्यकाल	:	लगभग साढ़े तीन साल
व्यावहारिक शिक्षा	:	बारहवीं
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, पुच्छिंसु णं, उववाई सूत्र की 22 गाथाएँ, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, श्रीमत् प्रज्ञापना सूत्र एवं श्रीमद् भगवती सूत्र के कुछ थोकड़े, जैन सिद्धांत बत्तीसी, अष्ट प्रवचन माता, तैंतीस बोल का थोकड़ा, 67 बोल, तत्त्व का ताला भाग-1 के थोकड़े, कर्म प्रज्ञप्ति एवं अन्य थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद
पदयात्रा	:	लगभग 800 किमी.

पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-पड़दादीजी	:	स्व. श्री इंद्रमल जी-स्व. श्रीमती प्यारी बाई मांडोत
दादाजी-दादीजी	:	स्व. रोशनलाल जी-मोहिनी बाई मांडोत
माताजी-पिताजी	:	रेखा देवी-गौतम जी मांडोत
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	:	पारसमल जी-ऊमा बेन मांडोत
भुआजी-फूफाजी	:	मेहताब बाई-सुवालाल जी देरासरिया, निम्बाहेड़ा जाटान
भाई	:	गौरव, हर्ष, भव्य, तेजस्
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री शोभालाल जी-लक्ष्मी बाई सहलोत
मामाजी-मामीजी	:	संजय जी सहलोत, अनिल जी-अरुणा बेन, चंद्रेश जी-यशोदा जी, भावेश जी-सोनम जी सहलोत
मौसीजी-मौसाजी	:	कल्पना जी-ललित जी चोपड़ा, जयश्री जी-प्रवीण जी गांधी
परिवार से दीक्षित	:	साध्वी श्री प्रकृति श्री जी म.सा. (साधुमार्गी) साध्वी श्री क्षायिकगुणा जी म.सा. (अन्य संप्रदाय)

।। जय महावीर।।

।। जय गुरु नाना।।

।। जय गुरु राम।।

सज्झायम्मि रओ सया

सदा स्वाध्याय में रत रहो...

COMING SOON

संपूर्ण संघों में

:: नियमावली ::

1) प्रतिदिन 26 आगम का स्वाध्याय लें।
2) प्रत्येक श्रावक-श्राविका लगभग 100 या अधिक गाथाओं का स्वाध्याय करें।
3) प्रत्येक श्रावक-श्राविका को उनके द्वारा किए जाने वाले स्वाध्याय की पुस्तिका भेजी जाएगी।
4) इन गाथाओं की वाचनी चारित्रात्माओं से लेने का लक्ष्य रखें। जिन क्षेत्रों में ऐसा संभव नहीं हो वहाँ वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं से ले सकते हैं।
5) स्वाध्याय के पश्चात् 'आगमे तिविहे' का पाठ अवश्य करें।
6) अस्वाध्याय के 32 कारण जो स्वाध्याय पुस्तिका में दिए जाएँगे। उनका यथोचित रीति से पालन करें।
7) 12 अंचलों को 4 जोनों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक जोन में 3 अंचल हैं।

Scan me For Registration

Zone - 1
1. मेवाड़
2. जयपुर-ब्यावर
3. दिल्ली-पंजाब हरियाणा व उत्तरी

Zone - 2
1. बीकानेर-मारवाड़
2. बंगाल-बिहार
3. पूर्वोत्तर

Zone - 3
1. मालवा
2. मुंबई-गुजरात
3. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश

Zone - 4
1. छ.ग.-ओड़िशा
2. कर्नाटक-आंध्र.
3. तमिलनाडु

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह..... 08
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र..... 12
श्रमणोपासक हेडलाइंस..... 14
भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार..... 15
अपने आचार्यदेव को जानें..... 30
विविध समाचार..... 33
विविध भेंट मार्फत..... 41
विनम्र श्रद्धांजलि..... 47
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति..... 49
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ..... 54

वाणी

सुविचार

खरा खोटा सोना कैसा, निकष पे ज्ञात होता।
ऊँच-नीच मनुज की, वाणी ही निशानी है।।
वचनों में खार नहीं, वार व अंगार नहीं।
ऊँचा नर कहे सदा, कानी को भी रानी है।।
बिना सोचे बोले बोल, ऐसे नर फूटे ढोल।
बोलते सभा में आधे, लोग ये अज्ञानी हैं।।
वीर कहे गौतम से, हितकारी प्रियकारी।
परिमित बोले वही, भाषा का विज्ञानी है।।

साभार – वीर कहे गौतम से

चिंतन

परमात्मा का वास : मनायतन

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

प्रदर्शन से दर्शन आवृत्त होता है। प्रदर्शन से गर्व बढ़ता है। प्रदर्शन से यथार्थ गौण हो जाता है। प्रदर्शन से परमात्मा दूर हट जाते हैं। प्रदर्शन से परमार्थ छिप जाता है। दर्शन भीतर ले जाता है, प्रदर्शन बाहर। दर्शन परिणामदायी होता है, प्रदर्शन से परिणाम अनिवार्य नहीं है। दर्शन आत्माभिमुख होता है, प्रदर्शन इंद्रिय-अभिमुख। दर्शन गंभीर होता है, प्रदर्शन छिछला। दर्शन मन आयतन को पवित्र बनाता है, प्रदर्शन उसे मलिन-विकृत बनाता है।

मनायतन विकारों का ही स्थान नहीं है, वह परमात्मा का भी आवास है। स्वच्छता का प्रारंभ मन से किया जाए। स्वच्छ मन देवों की रमण स्थली बन जाता है। देवत्व का अनुभव मन से ही संभव है। स्वच्छ मन पारदर्शी होता है। स्वच्छ मन, स्वस्थ तन का निर्माण करता है। स्वच्छ मन से साख बढ़ती है। स्वच्छ मन सुख-शांति एवं समाधि प्रदायक होता है। स्वच्छ मन से अज्ञान दूर होता है। स्वच्छ मन पाप विनाशक एवं प्रक्षालक होता है। स्वच्छ मन की पहचान है, जिसमें छल-कपट, दंभ-ईर्ष्या, डाह आदि के साथ-साथ वैर-विरोध के भाव न हों, ऐसा मन स्वच्छ मन की संज्ञा पाता है।

स्वच्छ मन सहज-सरल होता है। उसमें कहीं भी ग्रंथियाँ नहीं रहतीं। सरल मन स्वच्छता का प्रतीक है। मन की ऋजुभूत अवस्था से मन शुद्ध हो जाता है। शुद्ध मन में ही धर्म ठहर पाता है। मन साफ होगा, तब ही धर्म से प्राप्त होने वाले आनंद का अनुभव किया जा सकता है।

मन की पवित्रता से आभा मंडल की जो रचना होती है वह सुरक्षा कवच का रूप बन जाता है। यह कोई चमत्कार नहीं अपितु जीवन की सच्चाई है। मन जितना स्वच्छ-पवित्र होगा, सुरक्षा कवच भी उतना ही सशक्त व सघन होगा। मन से ही विपत्तियों को आने का मार्ग मिलता है एवं मन विपत्तियों को रोकता भी है। इसलिए मन पर यदि पूरा ध्यान रखा जाए तो जीवन की बाजी को जीत लेना बहुत आसान है। कहा भी जाता है- "**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।**"

फाल्गुन शुक्ल 10, शुक्रवार, 18.03.2016

साभार- आरोह

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

नीति-प्रयोग

29-30 सितंबर 2024 अंक से आगे...

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

शिशुपाल की आज्ञा से उसके योद्धा तैयार हुए। इतने में ही वहाँ रुक्म आ गया। उस समय शिशुपाल क्रोध में बड़बड़ा ही रहा था। रुक्म ने उससे पूछा कि क्या बात है? आप क्रुद्ध क्यों हैं?

शिशुपाल— ''ये दासियाँ आपकी बहन का श्रृंगार करने गई थीं, परंतु आपकी बहन ने इनके साथ बड़ा ही दुर्व्यवहार किया और इन्हें पिटवा दिया, साथ ही श्रृंगार सामग्री भी नष्ट करवा डाली तथा मेरे लिए बहुत ही अपमान भरी बातें कहीं। इसलिए मैंने अपने योद्धाओं को आज्ञा दी है कि आपकी बहन को पकड़ लाएँ।''

रुक्म— ''जरा ठहरिए, जल्दी मत करिए। रुक्मिणी को पकड़ लाना कोई सरल बात नहीं है। ऐसा करने के लिए उद्यत होने का अर्थ मुझ में और आप में युद्ध छेड़ना है। मैं इस प्रकार का अपमान कदापि सहन नहीं कर सकता। आपकी इन दासियों ने कोई अनुचित बात कही होगी तभी इनके साथ ऐसा व्यवहार हुआ होगा, अन्यथा रुक्मिणी तो क्या, कोई बुद्धिहीन मनुष्य भी ऐसा नहीं कर सकता। आप अपने योद्धाओं को रोकिए। इन दासियों की बातों में पड़कर आपस में युद्ध ठानने से उपहास होगा और कोई परिणाम भी नहीं निकलेगा। मैं आपसे प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि रुक्मिणी का विवाह आपके साथ अवश्य कर दूँगा, फिर आपको किसी प्रकार की चिंता या दूसरी कार्रवाई करने की क्या आवश्यकता है?''

रुक्म की बातों से शिशुपाल का क्रोध शांत हुआ। उसने अपने योद्धाओं को रोक लिया और रुक्म से मित्रता की बातें करने लगा। शिशुपाल के पास से उठकर रुक्म अपने घर आया। उसे रुक्मिणी पर बहुत क्रोध आ रहा था। वह विचार करने लगा कि आज रुक्मिणी के कारण मित्र भी शत्रु बन जाता और मैं जिससे संबंध जोड़ना चाहता हूँ, उसी से युद्ध हो जाता। अच्छा हुआ जो मैं समय पर पहुँच गया। नहीं तो शिशुपाल के योद्धा जब महल में घुसने लगते तब युद्ध अवश्यंभावी था। रुक्मिणी को इतना समझाया, बुझाया, परंतु वह अपनी हठ नहीं छोड़ रही। वह यह नहीं जानती कि भाई शिशुपाल से प्रतिज्ञाबद्ध है। उसे अपनी हठ के आगे मेरी बात का विचार ही नहीं है। उसकी हठ मानकर शिशुपाल के साथ उसका विवाह नहीं करने का अर्थ मुझे अपनी बात खोना और शिशुपाल को अपना शत्रु बनाना है। मैं एक नासमझ लड़की के कारण ऐसा अनर्थ कदापि नहीं होने दे सकता। अब तक उसे समझाने में मैं तटस्थ रहा हूँ, पर अब मैं स्वयं जाकर उसे समझाता हूँ। यदि वह मेरे समझाने पर भी नहीं समझी तो कल विवाह के दिन जबरदस्ती शिशुपाल के साथ उसका विवाह करा दूँगा। वह कर ही क्या सकती है? मैं चाहता था कि किसी प्रकार वह प्रसन्न रहे, परंतु जब वह मानती ही नहीं है, तब उसकी प्रसन्नता की अपेक्षा कैसे कर सकता हूँ?

इस प्रकार विचार कर रुक्म रुक्मिणी के महल में आया। वह रुक्मिणी को देखकर कहने लगा—''बहन रुक्मिणी! तुम अब तक ऐसे क्यों बैठी हो? तुम्हारे शरीर पर न

तो उबटन लगा और न ही किसी प्रकार का शृंगार है। सारे शहर में उत्सव हो रहा है। बारात आई हुई है और कल विवाह का दिन है, फिर भी तुम मलिन वेश धारण किए उदास बैठी हो।'' रुक्मिणी से इस प्रकार कहकर रुक्म रुक्मिणी की सखियों से कहने लगा—''तुम लोगों ने अब तक बहन का शृंगार क्यों नहीं कराया? तुम्हारा यह अपराध है तो अक्षम्य, परंतु रुक्मिणी के विवाहोपलक्ष्य में मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। अब शीघ्र शृंगार सामग्री लाकर मेरे सामने ही बहन का शृंगार कराओ।''

रुक्म समझता था कि मेरे इस कुटिल नीतिपूर्ण कथन से रुक्मिणी पर मेरा प्रभाव पड़ेगा, परंतु रुक्म की बातों का रुक्मिणी पर किंचित् भी प्रभाव नहीं पड़ा। उसने रुक्म से कहा—''भैया! आप इन पर व्यर्थ ही गुस्सा करते हैं। इनका क्या अपराध है? यदि कोई अपराध है तो मेरा है। मैंने ही उबटन आदि शृंगार नहीं किया है और न करूँगी।''

रुक्म— ''रुक्मिणी! तू बहुत भोली है। जान पड़ता है कि तुझे किसी ने बहका दिया है। आज तक तू कभी मेरे सामने भी नहीं बोली और आज तुम मेरी बात के विरुद्ध ऐसा कह रही हो? बारात आई हुई है, कल विवाह का दिन है और तू शृंगार ही नहीं करवाएगी। यह कैसे हो सकता है? नगर में तो इतनी धूमधाम है और जिसका विवाह है, वह ऐसी बातें कर रही है।''

रुक्मिणी— ''बारात आई है तो आए और नगर में धूमधाम है तो होए, मुझे इससे क्या?''

रुक्म— ''तो क्या बारात लौट जाएगी और तू कुँवारी ही बैठी रहेगी? तेरे वास्ते मैंने इतना परिश्रम उठाया, इतना व्यय किया, पिता का विरोध सहा और तू कुछ समझती ही नहीं है।''

रुक्मिणी— ''आपने जो कुछ भी किया वह अपने स्वार्थ के लिए किया। स्वार्थ के वश होकर आप मेरे अधिकार लूटने को तैयार हुए हैं। आपने मुझ पर कोई उपकार नहीं किया है अपितु न मालूम कब की शत्रुता का बदला चुकाया है।''

रुक्म— ''इसमें मेरा क्या स्वार्थ था? शायद तू यह समझती होगी कि मेरे विवाह का कार्य भाई ने अपने हाथ में लेकर पिता को इस विचार में तटस्थ रखा है कि पिता रुक्मिणी को बहुद्रव्य दे देंगे। यदि वास्तव में तेरे मन में यही संदेह हो तो तेरा यह संदेह भ्रमपूर्ण है। मेरी तू एक ही बहन है। मैं तुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय समझता हूँ। इसलिए मैं तुझे दहेज में इतना अधिक द्रव्य दूँगा कि जितना आज तक किसी ने भी न दिया होगा। हाथी, घोड़े, रथ, दास-दासियाँ, वस्त्राभूषण आदि देने में तनिक भी कमी न रखूँगा। बल्कि अपना आधा राज्य भी तुझे दे दूँगा। बोल, अब तो मेरा स्वार्थ नहीं है?''

रुक्मिणी— ''मुझे धन-संपत्ति या राज्य का किंचित् भी लोभ नहीं है और न ही जैसा आपने कहा वैसा मैं समझती हूँ। यदि आप इसी स्वार्थ के वश होते तब तो कोई बात ही न थी, परंतु आपका यह स्वार्थ नहीं है। आपका स्वार्थ तो शिशुपाल की मित्रता को दृढ़ बनाकर अपना राज्य सुरक्षित करना है। इसलिए आपने मेरे कन्योचित अधिकारों की हत्या करने की ठानी है। अन्यथा आप ही बताइए कि मेरी इच्छा जाने बिना आपको पिता की सम्मति की अवहेलना करके शिशुपाल को बुलाने का क्या अधिकार था?''

रुक्म— ''इसमें अधिकार की कौन-सी बात है? कन्या को जहाँ और जिसे दी जाए, उसे वहाँ और उसके साथ जाना ही चाहिए। इसमें कन्या की सम्मति जानने की क्या आवश्यकता है?''

रुक्मिणी— ''यह न्याय तो आप ही के मुँह का है। आप जैसा चाहें वैसा न्याय दे सकते हैं, परंतु नीतिशास्त्र और धर्मशास्त्र का तो यह कहना है कि जिसे कन्या चाहे, वही वर हो सकता है। जिसे कन्या नहीं चाहती, वह वर नहीं हो सकता।''

रुक्म— ''तू हमें नीति-धर्म सिखलाती है? क्या नीति-धर्म हमसे बढ़कर है?''

रुक्मिणी— ''हाँ, यह कहिए कि यदि हम नीति-धर्म को देखने जाएँ तो कन्या के इस अधिकार को कैसे लूट सकते हैं? भैया! आप मुझ पर यह अन्याय मत करिए। बहन के इस अधिकार को मत लूटिए। आपको सबके साथ न्याय करना चाहिए तो क्या आप बहन के साथ भी न्याय नहीं करेंगे? मैं शिशुपाल को नहीं चाहती। मेरी दृष्टि में शिशुपाल नीच से भी अधिक नीच है। वह वीर नहीं है, कायर पुरुष है। उसने अपनी दासियों द्वारा मुझसे कहलवाया कि मैं तुम्हें पटरानी बनाऊँगा और तुम्हारा आज्ञाकारी सेवक रहूँगा। उसने मुझे

देखा तक न था, मेरी बुद्धि के विषय में उसे कुछ अनुभव न था, फिर भी जो अपनी पत्नी के अधिकार छीनकर मुझे देने को तैयार है। जो स्त्री का सेवक बन सकता है, उसे वीर मानने का कौन-सा कारण है? मैं ऐसे नीच शिशुपाल को अपना पति कदापि नहीं बना सकती।''

रुक्म — ''मेरी समझ से तो शिशुपाल की किसी भी बात में समानता करने वाला संसार में कोई दूसरा है ही नहीं। तुम्हारी बात ठीक भी हो, तब भी यह विचार करो कि मेरे बड़े भाई अपनी बुद्धि के अनुसार जो कुछ कर चुके हैं, मैं उसकी अवहेलना कैसे करूँ? पिता के समान माने जाने वाले बड़े भाई के कार्य का विरोध करना कैसे ठीक है?''

रुक्मिणी — ''वाह भाई! आप तो बड़े ही न्यायशील हैं। साक्षात् पिता की सम्मति और उनके कार्य की अवहेलना करके आप मुझसे यह आशा कैसे करते हैं? आपने तो पिता की भी बात नहीं मानी और मुझसे पिता के समान बनकर अपनी बात मनवाना चाहते हैं? मैं आपके कहने में आकर आपकी बात रखने के लिए अपने प्राण तो त्याग सकती हूँ, परंतु शिशुपाल की पत्नी बनकर अपने तथा माता-पिता और जाति-कुल के मस्तक पर कलंक का टीका नहीं लगवाना चाहती। मैं स्वयं को एक पुरुष को समर्पित कर चुकी हूँ। मैंने एक पुरुष को अपना पति बना लिया है। अब धर्म को ठुकराकर मैं दूसरे पुरुष को अपना पति कदापि नहीं बना सकती। चाहे संसार की समस्त आपत्तियाँ मुझ पर बरसने लगें, चाहे संसार के सब लोग मेरी निंदा करें, चाहे देवगण मुझ पर कुपित हो जाएँ और चाहे संसार से मेरा अस्तित्व उठ जाए, परंतु आपकी इच्छा पूरी करने के लिए मैं धर्म का अपमान कदापि नहीं करूँगी। मेरे पति श्रीकृष्ण हैं। मैं उनको अपने हृदय मंदिर में बिठा चुकी हूँ। स्वयं का उनको समर्पण कर चुकी हूँ। अब शिशुपाल तो क्या साक्षात् इंद्र भी मेरे सामने आएँ और मुझे अपनी पत्नी बनाना चाहें तो मैं उन्हें काग और श्वान के समान समझकर उनका भी तिरस्कार ही करूँगी।''

रुक्म — ''रुक्मिणी! जरा विचार कर। वंश को कलंकित मत कर। कृष्ण किसी भी दृष्टि से तेरे योग्य नहीं है। न तो उसके जाति-कुल का पता, न वह क्षत्रिय समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है और न ही उसका रंग-रूप ही तेरे योग्य है। इन्हीं कारणों से मैंने पिता द्वारा किए गए कृष्ण के साथ तेरे विवाह करने के प्रस्ताव का विरोध किया था। शायद तू पिता के कहने में आ गई है या नारद तुझे भ्रम में डाल गया है, परंतु तू मेरे पर विश्वास रख। मैं कदापि तेरा अहित नहीं करूँगा और इसके लिए अपने जीवित रहते तो कृष्ण के साथ तेरा विवाह नहीं होने दूँगा।''

रुक्मिणी — ''आप मेरा विवाह श्रीकृष्ण के साथ नहीं होने देना चाहते और मैं शिशुपाल के साथ विवाह करना नहीं चाहती। बस समाप्त हुई बात। न आपकी इच्छानुसार कार्य हो, न मेरी इच्छानुसार कार्य हो। आप जिसे मेरा अहित समझते हैं, उसे ही मैं अपना हित समझ रही हूँ। अब वास्तविकता का निर्णय कौन करे? इसलिए जब तक वास्तविकता का निर्णय नहीं हो जाए, तब आप भी चुप रहिए, मैं भी चुप रहती हूँ और शिशुपाल से कह दीजिए कि वह भी अपने घर जाकर चुप बैठे।''

रुक्म — ''और अब तक जो कुछ हुआ है, वह सब व्यर्थ जाए। शिशुपाल खाली लौट जाए तथा मेरी सब बात बच्चों जैसी बात हो जाए। क्यों?''

रुक्मिणी — ''इसका मैं क्या करूँ? इस बात का विचार तो पहले ही कर लेना चाहिए था। सोच लेना था कि मैं पिता की बात का विरोध करके बहन का विवाह शिशुपाल के साथ करना तो चाहता हूँ, परंतु बहन की इच्छा भी तो जान लूँ। आपको अपनी इच्छा से मेरा जीवनसाथी चुनने का क्या अधिकार था? क्या मुझे अपने जीवन के सुख-दुःख के विषय में भी विचार करने का अधिकार नहीं है? क्या मैं पशुओं से भी गई-बीती हूँ? पशु की भी इच्छा देखी जाती है। यदि वह किसी के साथ नहीं जाना चाहता तो उसे भी जबरदस्ती नहीं भेजा जाता, लेकिन आपने मेरे लिए यह भी नहीं किया। क्या कन्या का जीवन इतना निकृष्ट है? क्या कन्याएँ मनुष्य नहीं हैं? शिशुपाल भी मनुष्य है और मैं भी मनुष्य हूँ। वह अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मुझ पर जबरदस्ती करे और मेरी इच्छा की हत्या करे। इसका क्या कारण? क्या पुरुष में ही इच्छा होती है, हममें इच्छा नहीं होती? पुरुष तो अपनी अनुचित इच्छा पूरी कर सकता है और हम अपनी उचित इच्छा भी पूरी नहीं कर सकतीं? बल्कि हमारे

माता-पिता और भाई ही उस दूसरे पुरुष की इच्छा पूरी करने के लिए अपनी बहन या पुत्री की इच्छा की घात करने को तैयार होते हैं। हमारा जीवन एक ऐसे व्यक्ति के अधीन करने को तैयार होते हैं जिसके अधीन होने की हम बिलकुल इच्छा नहीं रखतीं। हम कन्याओं पर होने वाला यह अन्याय सर्वथा असह्य है। मैं इस अन्याय का लक्ष्य नहीं बनूँगी, किंतु अपनी शक्तिभर यहाँ तक कि अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी इसका विरोध करूँगी और कन्याओं के इस अधिकार को सुरक्षित रखूँगी। मैं आपसे भी प्रार्थना करती हूँ कि आप यह अन्याय मत करिए, किंतु इस अन्याय को रोकने में मेरे सहायक बनिए।''

रुक्म — ''मैं सोचता था कि यह विवाह कार्य सानंद संपन्न हो। इसमें किसी प्रकार का विघ्न न हो और बहन को भी प्रसन्न रखा जाए, परंतु तेरा दुस्साहस तो बहुत बढ़ा हुआ है। तू समझाने से नहीं मानती। इस प्रकार की हठ का परिणाम अच्छा नहीं होता। मैंने शिशुपाल को बुलाया है और उसे वचन दिया है तो उसके साथ तेरा विवाह तो करूँगा ही, फिर चाहे तू प्रसन्नता से विवाह करना स्वीकार कर या विवश होकर। हम वीर हैं, क्षत्रिय हैं, बड़े-बड़े वीरों को भी हमारे सामने अपनी बात छोड़नी पड़ती है, तो तू चीज ही क्या है! कल मैं तुझे पकड़कर तेरा विवाह शिशुपाल के साथ कर ही दूँगा।''

रुक्मिणी — ''दुराग्रही को अपना दुराग्रह दिखाई नहीं देता, वह तो सत्याग्रही को दुराग्रही ही कहता है। इसके अनुसार आप अपना अन्यायपूर्ण हठ नहीं देखते और मेरी सच्ची बात को भी हठ बता रहे हैं। आप वीर हैं तो क्या एक कन्या का अधिकार लूटने के लिए? अन्याय करने के लिए? आपके साथ उन लोगों ने अपनी बात छोड़ दी होगी जिन्हें प्राणों का ममत्व होगा। मैं तो पहले ही प्राणों का ममत्व छोड़ चुकी हूँ और प्राणों का ममत्व छोड़कर ही मैंने अन्याय का विरोध करने का साहस किया है। आप इस शरीर पर अपना आधिपत्य जमा सकते हैं। इस शरीर को अपने अन्याय, अपनी वीरता और अपने क्षत्रियत्व का लक्ष्य बना सकते हैं, परंतु आत्मा शरीर से भिन्न है। **'मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ।'** इसलिए मुझे आपसे, आपकी सेना से या आपके मित्र शिशुपाल से तनिक भी भय नहीं है।''

रुक्म की सारी नीति असफल हुई। वह रुक्मिणी पर क्रोध करता हुआ वहाँ से चला गया। रुक्म के चले जाने पर रुक्मिणी की माता, भोजाई और राजपरिवार की अन्य स्त्रियाँ रुक्मिणी को समझाते हुए कहने लगीं कि अपने बड़े भाई की आज्ञा न मानना अपराध है, पाप है। रुक्म को रुष्ट करना ठीक नहीं है। वह बड़ा ही क्रोधी है। कल वह अवश्य ही तुम्हारा विवाह शिशुपाल के साथ कर देगा। फिर तुम प्रसन्नता से विवाह करना स्वीकार न करके अपने को विपत्ति में क्यों डाल रही हो, गृह में क्लेश क्यों फैला रही हो और अपना अपमान क्यों करा रही हो? अभी तो समय नहीं गया है। तुम यदि स्वीकृति दो तो हम रुक्म को शांत कर देंगी।

इस प्रकार सब स्त्रियों ने रुक्मिणी से शिशुपाल के साथ विवाह करना स्वीकार कराने की बहुत चेष्टा की, परंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। अंत में निराश होकर वे सब भी अपने-अपने स्थान को चली गईं।

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

– क्रमशः

"जो कर्मों से मुक्त हैं, सिद्ध परमात्मा हैं, उनको अमुक्त मानना तथा जो राग-द्वेषादि मोह कर्म से मुक्त अरिहंत वीतराग हैं, उनमें रागादि का भाव मानना मुक्त में अमुक्त बुद्धि रखना है। इसके अतिरिक्त आगमों में निहित मिथ्यात्व के अलग-अलग भेदों का निरूपण आचार्यों ने भी किया है। श्री रत्नशेखरसूरि ने मिथ्यात्व के पाँच भेदों का निरूपण करते हुए कहा है —''जिनोपदिष्ट जीवादि तत्त्वों पर अश्रद्धा रखना अथवा श्रद्धा भी मिथ्या रखना, विपरीत प्ररूपणा करना, जिनोपदिष्ट तत्त्वों पर संदेह रखना अथवा उनका अनादर करना, ये पाँच प्रकार का मिथ्यात्व है। इसका सेवन करने वाला मिथ्यादृष्टि है।''

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

29-30 सितंबर 2024 अंक से आगे...

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

ज्ञान लब्धि

प्र.2549 मति-श्रुतज्ञान अलब्धि में ज्ञान-अज्ञान दोनों होने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर मति-श्रुतज्ञान अलब्धि यानी मति श्रुतज्ञान तो नहीं है, किंतु 2 या 3 अज्ञान है अथवा केवलज्ञान है।

प्र.2550 अवधिज्ञान लब्धि में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर अवधिज्ञान लब्धि में 4 ज्ञान की भजना अर्थात् अवधिज्ञानी में 3 या 4 ज्ञान होते हैं।

प्र.2551 अवधिज्ञान अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर
1. अवधिज्ञान अलब्धि में 4 ज्ञान की भजना अर्थात् अवधिज्ञान नहीं है, किंतु मति-श्रुत, मनःपर्यवज्ञान है या केवलज्ञान है।
2. मिथ्यादृष्टि या सम्यग्मिथ्यादृष्टि है तो 3 अज्ञान की भजना।

इसी प्रकार मनःपर्यवज्ञान का भी कहना चाहिए, किंतु मनःपर्यवज्ञान को छोड़कर शेष 4 ज्ञान कहना।

प्र.2552 केवलज्ञान लब्धि और अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर
1. केवलज्ञान लब्धि में एक केवलज्ञान,
2. केवलज्ञान अलब्धि में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना अर्थात् सम्यग्दृष्टि के 4 ज्ञान की भजना, मिथ्या या सम्यग्मिथ्यादृष्टि के 3 अज्ञान की भजना।

प्र.2553 मति-श्रुत अज्ञान लब्धि तथा विभंगज्ञान लब्धि में कितने अज्ञान होते हैं?

उत्तर
1. मति-श्रुत अज्ञान लब्धि में 3 अज्ञान की भजना, क्योंकि 2 या 3 अज्ञान होते हैं।
2. विभंगज्ञान लब्धि में 3 अज्ञान की नियमा।

प्र.2554 तीनों अज्ञान की अलब्धि में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर तीनों अज्ञान की अलब्धि में 5 ज्ञान की भजना, अर्थात् 2-3-4 ज्ञान या एक केवलज्ञान होता है।

दर्शन लब्धि

प्र.2555 दर्शन लब्धि किसे कहते हैं?

उत्तर मोहनीय कर्म के उदय, उपशम, क्षय या क्षयोपशम से प्राप्त आत्मपरिणाम को दर्शन लब्धि कहते हैं। इसके तीन भेद हैं। यथा- सम्यग्दर्शन, मिथ्यादर्शन, सम्यग्मिथ्यादर्शन।

प्र.2556 समुच्चय दर्शन लब्धि और अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर 1. समुच्चय दर्शन लब्धि में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना और

2. दर्शन अलब्धि में कोई जीव नहीं होता है, क्योंकि दर्शन रुचि (जीव के परिणाम) रूप है और वे परिणाम सब जीवों में होते हैं।

प्र.2557 सम्यग्दर्शन लब्धि में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर सम्यग्दर्शन लब्धि में 5 ज्ञान की भजना (2-3-4 या 1 ज्ञान)।

प्र.2558 सम्यग्दर्शन अलब्धि का क्या तात्पर्य है एवं उसमें कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर सम्यग्दर्शन अलब्धि यानी सम्यग्दर्शन नहीं है, किंतु मिथ्यादर्शन या सम्यग्मिथ्यादर्शन है। अतः इसमें 3 अज्ञान की भजना (2 या 3 अज्ञान)।

प्र.2559 मिथ्यादर्शन लब्धि में कितने अज्ञान होते हैं?

उत्तर मिथ्यादर्शन लब्धि में 3 अज्ञान की भजना (2 या 3 अज्ञान)।

प्र.2560 मिथ्यादर्शन अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर मिथ्यादर्शन अलब्धि अर्थात् मिथ्यादर्शन नहीं है, किंतु सम्यग्दर्शन या सम्यग्मिथ्यादर्शन है, इसलिए 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

प्र.2561 सम्यग्मिथ्यादर्शन लब्धि (मिश्रदृष्टि) में कितने अज्ञान होते हैं?

उत्तर सम्यग्मिथ्यादर्शन लब्धि में 3 अज्ञान की भजना (2 या 3 अज्ञान)।

प्र.2562 सम्यग्मिथ्यादर्शन अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर सम्यग्मिथ्यादर्शन अलब्धि अर्थात् सम्यग्मिथ्यादर्शन नहीं है, किंतु सम्यग्दर्शन या मिथ्यादर्शन है, इसलिए 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

चारित्र लब्धि

प्र.2563 चारित्र लब्धि में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर चारित्र लब्धि में 5 ज्ञान की भजना (2-3-4 या 1)।

प्र.2564 चारित्र अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर चारित्र अलब्धि में मनःपर्यवज्ञान को छोड़कर शेष 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना। (मनःपर्यवज्ञान साधु को ही होता है।)

प्र.2565 चारित्र लब्धि कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन कषाय और नोकषाय के क्षयोपशम से चारित्रलब्धि प्राप्त होती है।

प्र.2566 सामायिक चारित्र लब्धि में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर सामायिक चारित्र लब्धि में 4 ज्ञान की भजना।

प्र.2567 सामायिक चारित्र अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर सामायिक चारित्र अलब्धि अर्थात् सामायिक चारित्र नहीं है, किंतु शेष 4 चारित्र हैं अथवा 1-5 गुणस्थान वाले जीव हैं। इसलिए सामायिक चारित्र अलब्धि में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना। इसी प्रकार शेष 3 चारित्र का भी उपयोगपूर्वक वर्णन करना चाहिए।

प्र.2568 यथाख्यात चारित्र लब्धि में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर यथाख्यात चारित्र लब्धि में 5 ज्ञान की भजना (2-3-4 या 1)।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में भीलवाड़ा में लग रहा अद्भुत धर्माराधना का ठाठ। 7 अक्टूबर 2024 को पूर्व घोषित पाँच दीक्षाओं के साथ एक और दीक्षा सहित कुल 6 दीक्षाएँ संपन्न। छेदोपस्थापनीय चारित्र भी सोल्लास संपन्न।
- मुमुक्षु बहन युक्ता जी चोरड़िया (राजनांदगाँव) का आज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा पर दीक्षा 7 फरवरी 2025 के लिए घोषित की।
- श्री गगन मुनि जी म.सा. के मासखमण का पारणा। संत श्री इभ्य मुनि जी म.सा. के इस चातुर्मास में सातवीं अठाई प्रारंभ। अन्य अनेकानेक तपस्याएँ गतिमान।
- मोक्षार्थी शिविर, मोक्षाणुभूति शिविर, बालिका संस्कार शिविर, रक्तदान शिविर, दंत चिकित्सा शिविर आदि के आयोजन से धर्म एवं सेवा का अद्भुत दर्शन। दीपावली पर पटाखे जलाने का त्याग अनेकानेक बच्चों एवं भाई-बहनों ने ग्रहण किया।
- श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ एवं सहयोगी शाखाओं का वार्षिक अधिवेशन अभूतपूर्व उल्लास व नवसंकल्पों के साथ 2 से 4 अक्टूबर को भीलवाड़ा में संपन्न। विभिन्न संघ श्रेय कार्यक्रमों के साथ गुरुदर्शनों के लाभ से गुरुभक्त हर्षान्वित हुए।
- महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 नवकार, 9 लोगस्स एवं 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना 9 फरवरी तक करने के संकल्प से हजारों श्रावक-श्राविकाएँ धन्य बने।
- रविवारीय समता शाखा आराधना से भीलवाड़ा सहित देशभर के युवा एवं श्रावक-श्राविकाएँ धर्मोन्मुख हो इस आयाम को सफल करने की दिशा में संकल्पित।
- मुमुक्षु भाई-बहनों का शानदान अभिनंदन। केंद्रीय एवं स्थानीय संघ सहित अनेकानेक संस्थाओं ने संयम भावों का किया बहुमान। अभिनंदन से पूर्व वरघोड़ा एवं अभिनदंन पश्चात् ओघा बँधाई कार्यक्रम आयोजित।
- भीलवाड़ा जिला कलक्टर नमित जी मेहता, जीतो एपेक्स के पूर्व उपाध्यक्ष महावीर सिंह जी चौधरी, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों, नीदरलैंड (यूरोप) के अरिहंत कुमार जी बोथरा, तृप्ति जी बोथरा एवं अरोही जी बोथरा ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।
- प्राकृत के साथ पाली, मराठी, असमिया, बंगाली भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिला। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र जी मोदी ने 3 अक्टूबर 2024 को आयोजित कैबिनेट बैठक में की घोषणा।

भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार

संयम में है शुद्धाचार। राम गुरु की जय-जयकार।।
जब भी हो गुरुदेव के दर्शन समझो तीरथ हो गया।

युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में लग रहा दीक्षाओं का ठाठ

पूर्व घोषित 5 दीक्षाओं के साथ एक और दीक्षा संपन्न, छेदोपस्थापनीय चारित्र सोल्लास संपन्न

मुमुक्षु युक्ता जी चोरड़िया की दीक्षा 7 फरवरी के लिए घोषित

अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी एवं प्रवचन पंडाल, प्राथमिक विद्यालय, धांधोलाई, भीलवाड़ा।

ज्ञान व क्रिया के संगम,
जिनशासन का दिव्य सितारा।
कलयुग में श्री रामचरण में,
सतयुग का है सदा नजारा।।

इस मनुष्य भव में नर से नारायण बन सकते हैं
- आचार्य भगवन्

धर्म संघ में निःस्वार्थ भाव से जुड़ें
- उपाध्याय प्रवर

त्याग व करुणा की निर्मल धारा के पर्याय युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-24 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा-48 के शिखर महोत्सव चातुर्मास में भवीजन महापुरुषों के जीवन निर्माणकारी प्रवचनों व साधना से पावन और पवित्र हो रहे हैं। श्री इभ्य मुनि जी म.सा. इस चातुर्मास में अपनी सातवीं अठाई पूर्ण करने जा रहे हैं। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. 9 उपवास के साथ आगे बढ़ रहे हैं। अन्य अनेक चारित्रात्माओं व श्रावक-श्राविकाओं के तपस्याएँ गतिमान हैं।

मोक्षार्थी शिविर, मोक्षानुभूति शिविर, बालिका संस्कार शिविर, रक्तदान शिविर, दंत चिकित्सा शिविर आदि के आयोजन हुए। '**लोच में क्या सोच**' के अंतर्गत 285 लोच अब तक हो चुके हैं। मुमुक्षु भाई-बहन अनवरत मोक्ष

मार्ग की ओर गतिशील हैं। इसी क्रम में **7 अक्टूबर** को **मुमुक्षु वीरांश जी पितलिया** (हैदराबाद), **मुमुक्षु संगीता जी पितलिया** (हैदराबाद), **मुमुक्षु करुणा जी गुलेच्छा** (केतुकलां), **मुमुक्षु निमिषा जी मांडोत** (पाणेठा, सूरत), **मुमुक्षु काजल जी नाहटा** (रोड अतरिया), **मुमुक्षु जिया जी कोठारी** (बेंगलुरु) सहित कुल छह दीक्षाएँ आचार्य श्री रामेश के मुखारविंद से संपन्न हुईं।

मुमुक्षु युक्ता जी चोरड़िया (राजनांदगाँव) की दीक्षा **7 फरवरी 2025** के लिए घोषित होते ही संपूर्ण सभा में हर्ष छा गया। नवदीक्षित संत-सतीवृंद की बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम अपूर्व धर्मोल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। षट्रस तप, ओली तप की आराधना भी संपन्न हुई। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का ताँता लगा हुआ है। चातुर्मास को अद्वितीय बनाने में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल एवं सकल जैन समाज, भीलवाड़ा की धर्मनिष्ठा, सेवा भावना सराहनीय है।

कितने ही कष्ट आ जाएँ आत्मा चलित न हो

1 अक्टूबर 2024। प्रार्थना के मधुर स्वरों में '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' गीत का संगान हुआ। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''जो वस्तु के स्वरूप को सम्यक् प्रकार से जान लेता है वह मुनित्व को जान पाता है और जो मुनित्व को जान पाता है, वह वस्तु के सम्यक् स्वरूप का बोध करने वाला होता है। कोई कैसी भी वस्तु हो, उसमें उत्पन्न होने, विनाश होने एवं सदा स्थायी होने का गुण है। जिसमें तीन अवस्थाएँ नहीं होती, वह वस्तु पदार्थ नहीं हो सकती। भगवान महावीर ने गौतम स्वामी को तत्त्वबोध दिया कि जो कसौटी पर खरा उतरता है वह सही है। जो कसौटी पर खरा नहीं उतरता वह सही नहीं है। सिद्ध होने के लिए घन होना जरूरी है। यहाँ पर इतना घनीभूत हो जाएँ कि कितने भी कष्ट आ जाएँ फिर भी उनसे आत्मा चलित नहीं हो। वह आत्मा घन अवस्था को प्राप्त करेगी। जैन सिद्धांत मानता है कि वस्तु कभी समूल नष्ट नहीं होती। चैतन्य, चैतन्य रहता है और पुद्गल, पुद्गल के रूप में रहता है।''** संयति राजा चारित्र भाग का सुंदर वर्णन आचार्य भगवन् ने फरमाया।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संत दर्शन के लिए जब भी जाएँ तो सभी धार्मिक क्रियाओं में अवश्य भाग लें। प्रार्थना, प्रवचन के साथ ही प्रतिक्रमण, संवर अवश्य करें। साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

सिद्धांतों से समझौता नहीं

2 अक्टूबर 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को भगवान महावीर की पावन जिनवाणी का रसपान कराते हुए आगममर्मज्ञ परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना क्यों की गई? क्या उद्देश्य था? समझौता सिद्धांतों से नहीं हुआ करता। सिद्धांत त्रैकालिक तथा शाश्वत होते हैं। पूज्य श्री गणेशलाल जी म.सा. श्रमण संघ के उपाचार्य थे। नेतृत्व का सारा दायित्व आप पर ही था। जब भगवान महावीर के सिद्धांतों के विपरीत अवस्थाएँ परिलक्षित होने लगी तो वे उन्हें मंजूर नहीं हो पाई। जब सुधार नजर नहीं आया तो उनकी आत्मा ने आवाज दी कि आचार्य, उपाचार्य पद महत्त्वपूर्ण नहीं है।**

महत्त्वपूर्ण है भगवान महावीर की आज्ञा। महत्त्वपूर्ण है उनकी आत्मा ने जो आवाज दी कि अपनी आत्मा के साथ धोखाधड़ी नहीं करना। सिद्धांतों से धोखा नहीं करना। उन्होंने अपने आपको श्रमण संघ से अलग कर लिया। साधुओं का, श्रावकों का बहुत प्रयत्न रहा कि आप उपाचार्य पद पर बने रहें, किंतु उन्होंने सिद्धांतों के साथ समझौता करने की बजाय अपने आपको अलग कर लिया। जब सुधार के रास्ते बंद हो जाएँ तो अपने सिद्धांतों में अपने आपको स्वस्थ रखना चाहिए। इसी भावना से श्रावक संघ का भी गठन हुआ। भगवान महावीर के सिद्धांतों की रक्षा करना, अहिंसा, सत्य, अचौर्य की प्रतिष्ठा करने के लिए सबके विचार एक समान हो यह जरूरी नहीं है, किंतु विचारों को एक दिशा में ढाला जा सकता है। नेतृत्व बहुत जरूरी होता है। नीतिकारों ने कहा है कि जिस समुदाय का कोई नायक नहीं होता, उसका विनाश हो जाता है। जिसके बहुत सारे नायक होते हैं, उस समुदाय का विनाश नजदीक होता है। नेतृत्व एक के जिम्मे होना चाहिए। गुणकर्म के आधार पर व्यक्ति का चयन होना चाहिए। किस व्यक्ति में क्या क्षमता है, उसके अनुसार उसका मूल्यांकन होना चाहिए।''

बहुश्रुत वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**गुरु उच्च सिद्धांतों के साथ नेतृत्व करते हैं एवं निर्णय करते हैं। हमें कितने लोग जानते हैं ये महत्त्वपूर्ण नहीं है। हमने कितने लोगों को ऊँचा उठाया हैं, ये महत्त्वपूर्ण है। कुशल नेतृत्व दुर्लभ है। इस दुनिया में प्रतिभा की कमी नहीं है। प्रतिभा एक से बढ़कर एक है। अच्छा नेतृत्व वह है जो उन्हें आगे लाता है। अच्छा नेतृत्व वह है जिसने अनेक नेतृत्वकर्ताओं का निर्माण किया है। जो अपने नहीं समुदाय के हित की बात सोचे, वह कुशल नेतृत्वकर्ता है। कुर्सी चली जाएगी तो सब कुछ चला जाएगा, ऐसा न सोचें। स्वार्थवृत्ति छोड़ें। धर्मसंघ के साथ जुड़ें और नि:स्वार्थता के भाव कण-कण में लाएँ।**''

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि छोटे-छोटे त्याग-नियम, प्रत्याख्यान से जीवन को आगे बढ़ाएँ। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**धन्य है जिनवाणी गुरुवर**' भक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री की राष्ट्रीय बैठक एवं महत्तम महोत्सव की बैठक उत्साहपूर्वक संपन्न हुई।

मुमुक्षु युक्ता जी चोरड़िया की दीक्षा 7 फरवरी को आगारों सहित घोषित

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण।
धन्य-धन्य, धन्य-धन्य कह रहा है सबका मन।।

युगनिर्माता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन चरणों में 25 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री युक्ता जी चोरड़िया** सुपुत्री राजेश जी अनिता जी चोरड़िया, सुपौत्री श्री गुलाबचंद जी राधा बाई चोरड़िया (राजनांदगाँव) की दीक्षा हेतु परिवारजनों ने स्वीकृति-पत्र सहर्ष गुरुचरणों में समर्पित किया। जयवंता-जयवंता एवं महापुरुषों के जय-जयकार से संपूर्ण माहौल गूँज उठा।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर जैसे ही **7 फरवरी 2025** हेतु दीक्षा की घोषणा की, संपूर्ण सभा गुरुभक्ति से सराबोर हो उठी। एक अलग कार्यक्रम में वीर चोरड़िया परिवार का श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा की ओर से हार्दिक अभिनंदन किया गया।

मुमुक्षु बहन युक्ता जी चोरड़िया ने अपने उद्‌गार में कहा कि गुरु भगवंतों की कृपा से मेरी वर्षों की तमन्ना पूर्ण होने जा रही है। शीघ्र ही संयम रत्न को पाकर परम मंजिल का वरण करूँ यही कामना है। पारिवारिकजनों ने मुझे जो सहकार दिया है उसके लिए सदा ऋणी रहूँगी। चोरड़िया परिवार की ओर से सुंदर भाव गीतिका प्रस्तुत की गई।

किसी और को नहीं मोह को पछाड़ने के लिए है जिंदगी

3 अक्टूबर 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् प्रवचन स्थल पर धर्मसभा के लिए उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''संसार में अनेक प्रकार के गुरु हैं। धर्म गुरु वे हैं जो धर्म का उपदेश देते हैं। गुरु हमारे सुखों की आधारशिला हैं। साधु में पाँच समिति तीन गुप्ति की भूमिका नहीं है तो सब बेकार है। सच्चा श्रावक वह है जो तीर्थंकर भगवंतों के मार्ग पर अटूट श्रद्धा रखता है। जिसके जीवन के आधार में धर्म नहीं है वह कभी भी अशांत, अकर्मण्य हो सकता है। साधु हो या श्रावक आत्मकल्याण की ललक होनी ही चाहिए। समिति गुप्ति की आराधना एवं श्रावक धर्म का पालन अपूर्व आनंद देने वाला है। किसी और को पछाड़ने के लिए नहीं अपितु मोह को पछाड़ने के लिए जिंदगी है। संघ सेवा बहुत बड़े पुण्य का कार्य है। संघ में हमने कितने लोगों को जोड़ा या तोड़ा, आत्मचिंतन करें।''**

महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत
9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं
के साथ 9 बार गुरुवंदना
9 फरवरी तक करने का नियम
हजारों भाइयों व बहनों ने लिया।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धार्मिक क्षेत्र में माया, छल, कपट से दूर रहें, सरलता को जीवन में स्थान दें।

साध्वी श्री जयघोषा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि 24 वर्षों के बाद श्रीचरणों में चातुर्मास का एवं 17 वर्षों के बाद पावन दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ है। गुरुवर की कृपादृष्टि सदैव बनी रहे, यही मंगलकामना है। देश के कोने-कोने से आगत संघ सदस्यों, पदाधिकारियों ने गुरु भगवंतों से ऊर्जा प्राप्त की।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया। श्री इभ्य मुनि जी म.सा. ने अपना छठा अठाई तप पूर्ण किया। महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना 9 फरवरी तक करने का नियम हजारों भाइयों व बहनों ने लिया। समता युवा संघ, भीलवाड़ा द्वारा सफल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 135 यूनिट रक्तदान हुआ। गौरवशाली श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ की बैठकें उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई।

अपेक्षा दु:ख का कारण

4 अक्टूबर 2024। मंगलमय प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् भगवान के अमर संदेश को आत्मसात् करने हेतु उपस्थित हुए अपार गुरुभक्तों को अमृतदेशना का पान कराते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''प्रत्येक जीव जीना चाहता है, सुख चाहता है। कोई भी प्राणी दु:ख नहीं चाहता। हर प्राणी सुख की कामना करता है। दु:ख पैदा क्यों होता है? हमने जैसा बोया वैसा पाया। दु:ख है मन का अप्रिय संवेदन। मन के अनुकूल हुआ तो सुख मान लेते हैं और मन के प्रतिकूल हुआ तो दु:ख मान लेते हैं। साधु के दर्शन पुण्य रूप होते हैं। स्वयं तीर्थंकर भगवान यदि हमारे भावों में उतर जाएँ तो हमारे जीवन में दु:ख नहीं रहेगा। हम जानते हुए भी संसार का त्याग क्यों नहीं कर पाते, क्योंकि आदत पड़ गई है इसलिए नहीं छूटता।**

परिवार में जीने की, मोह में जीने की आदत अनादिकाल से पड़ी हुई है। उस आदत को छोड़ने के लिए बहुत पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। साठ-सत्तर साल के होने के बाद भी व्यापार नहीं छूट रहा है। अपेक्षा दुःख का कारण है। हमारी अपेक्षाओं के अनुसार जब हमारा काम नहीं होता तो हम दुःखी होते हैं और अनुकूलता के अनुसार काम हुआ तो सुख मानते हैं। इस मनुष्य जन्म में अच्छी साधना हो सकती है। नर से नारायण बना जा सकता है। आत्मा का सुख मनुष्य भव में ही मिलेगा। शिवसुख पाना हो तो प्यारे त्यागी बनो। अच्छे संस्कार होंगे तो अच्छी दिशा में ले जाएँगे। बच्चों को रोज एक छोटा-सा नियम दिलाएँ।''

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि '**संयम शतम**' में हम अपना योगदान देवें। घर-परिवार, समाज से किसी के भी दीक्षा-संयम के भाव हों तो हम अंतराय न दें। साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरु के सान्निध्य में दीक्षाओं का ठाठ लगा हुआ है। महापुरुषों के श्रेष्ठ आचार-विचार की वजह से लोग इनके चरणों में झुकते हैं। नाना गुरु ने राम गुरु के रूप में अनमोल हीरा संघ को दिया है। हम भी साधना को आगे बढ़ाएँ।

चारित्रात्माओं के लिए श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने एवं श्रावक-श्राविकाओं के लिए संघ के राष्ट्रीय महामंत्री जी ने संकल्प सूत्र का वाचन किया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि संघ समर्पणा के अवसर पर हम आचार्य भगवन् से एक याचक के रूप में विनती करते हैं कि आपकी कृपादृष्टि हम सब पर बनी रहे। सभी आयाम एवं प्रवृत्तियाँ हमारे जीवन का हिस्सा हैं। आपकी कृपा के बिना उन पर चलना मुश्किल है। आज हम शुद्ध अंतःकरण से यहाँ उपस्थित हुए हैं। आपकी कृपा एवं आशीर्वाद से हम उत्तरोत्तर साधना, सेवा में अभिवृद्धि करें। हमारे साधुमार्गी संघ पर सदैव आपकी कृपा बनी रहे। हम सेवा करते-करते साधना के पथ पर आगे बढ़ें।

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि युवा संघ आपके द्वारा फरमाए गए कल्याणकारी सत्संकल्पों व आयामों की निरंतर प्रभावना कर रहा है। साथ ही स्वयं के आध्यात्मिक अभिवृद्धि के लिए तप-त्याग व ज्ञानार्जन के पथ पर गतिमान है। समता युवा संघ का हर युवा साथी '**नो नेम, नो ब्लेम**' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए निष्ठा के साथ संघ सेवा हेतु कटिबद्ध है। आपकी कृपा सदैव बनी रहे। अविनय असातना के लिए क्षमायाचना।

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा ने कहा कि उभय गुरु भगवंतों की कृपा से महिला समिति नारी जागरण एवं धर्म व ज्ञान चेतना हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित कर रही है। आपकी कृपा सदैव बनी रहे। राष्ट्रीय अध्यक्षा ने '**सज्झायम्मि रओ सया**' के अंतर्गत आगम स्वाध्याय से जुड़ने की सभी से अपी की।

क्रोध प्रीति का नाश करता है

5 अक्टूबर 2024। '**म्हारे नैणां में आओ बस जाओ महावीर**' सुंदर भक्ति गीत के साथ प्रातःकालीन प्रार्थना में भक्ति की गई। धर्म मार्ग की ओर उन्मुख होने हेतु हजारों गुरुभक्त श्रावक-श्राविकाएँ एवं आबाल-वृद्ध धर्मसभा में उपस्थित थे। उन सभी को धर्म का अमृततत्त्व बताते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''दुःख पैदा होता है मोह कर्म के उदय से और दुर्भाग्य पैदा होता है नाम कर्म के उदय से। मोह नहीं बढ़ाया होता तो दुःख नहीं होता। आपके प्रिय व्यक्ति को चोट पहुँचे और एक सामान्य व्यक्ति को चोट पहुँचे तो आपको ज्यादा पीड़ा किसके लिए होगी? भारत में प्रतिदिन कितने ही एक्सीडेंट होते हैं। आपको

कितना दु:ख होता है? क्रोध प्रीति का नाश करता है। हरिकेशबल मुनि सांसारिक अवस्था में पहले क्रोध में सुलगते थे फिर क्षमा का भाव आ गया। मान, सम्मान, प्रतिष्ठा, पद की चाह नहीं रखना। श्रावक का जीवन भी साधना का जीवन है। कर्तव्य निर्वाह पहले रखना चाहिए। श्रावक का कर्तव्य है देव-गुरु-धर्म की उपासना करना, परमार्थ की उपासना करना। कर्मों को क्षय करना और परम मंजिल को पाना लक्ष्य होना चाहिए। **सुसाधु की पहचान ईर्या, भाषा, एषणा, ओलखजो आचार, गुणवंत साधु देखने वंदु बारंबार**। साधु की भाषा कैसी है और गवेषणा कैसी है, उससे साधु जीवन का परिचय हो जाएगा। श्रावक को आठ वचन व्यवहार ध्यान में रखना होगा।''

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने '**आया कहाँ से कहाँ है जाना**' भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि धर्म का मूल विनय है। विनय दो प्रकार का है - एक बाहर का और दूसरा भीतर का। किसी के आने पर खड़े होना और पीठ नहीं दिखाना बाहर का विनय है। भीतर का विनय है - जो गुरु फरमाते हैं वैसा करना। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '**म्हारे नैणां में आओ गुरुशज**' गुरुभक्ति गीत का संगान किया। छत्तीस वंदना करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

हमारी नजर अच्छी तो दुनिया अच्छी नजर आएगी

6 अक्टूबर 2024। रविवार के अवकाश का दिन और गुरुवर का सान्निध्य प्राप्त हो तो कौन आपश्रीजी के विशेष समता शाखा आराधना आयाम से चूकेगा। यही मौका भीलवाड़ा क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं को आज के विशेष दिवस पर प्राप्त हुआ और इसका लाभ उठाने हेतु अपार जनसमूह प्रात:काल ही प्रार्थना स्थल में उपस्थित हो गया। सभी ने सामूहिक रूप से रविवारीय समता शाखा में समता आराधना कर अपना जीवन धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ाया।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित हजारों जनमानस को धर्म का मूल समझाते हुए दया एवं करूणा के सागर आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''जहाँ राग होता है वहाँ द्वेष भी होता है। जहाँ द्वेष होता है वहाँ राग भी होता है। यह मन की तरंग राग-द्वेष के चक्रव्यूह में उलझी रहती है। राग-द्वेष हमारे भीतर तरंगें पैदा करता है। मोह-ममत्व हमारे भीतर उद्वेलन पैदा करता है। कोई मेरा नहीं है। एक मेरी आत्मा का ज्ञाता और द्रष्टा भाव ही उसका अपना है। ज्ञाता-द्रष्टा भाव जानना और देखना है। जानो, देखो, किंतु उससे अलग रहो। दुनिया में यदि कोई बुरी चीज है तो वह हमारी नजर है। हमारी नजर यदि बुरी है तो हमें पूरी दुनिया बुरी नजर आएगी और यदि नजर अच्छी है तो सारी दुनिया अच्छी नजर आएगी। यदि मेरी निगाह तृप्त है तो कोई आकांक्षा जागृत नहीं हो पाएगी। समाधि हमारे भीतर है। जैसी मेरी आत्मा का रूप है वैसा ही सारी आत्माओं का रूप है और वैसा ही परमात्मा का रूप है। आज मुमुक्षु बहनें यहाँ उपस्थित हैं। कल इनके वस्त्र बदल जाएँगे। सोचने-विचारने में भी बदलाव आ जाएगा। **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**।''

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने '**संयम के भाव है आज जगे, मेरे नाम के आगे शाम लगे**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् सभी को संयम की दिशा में प्रेरित कर रहे हैं। साध्वी श्री रामांजना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि वीर पथ पर सांसारिक वीर माता व वीर भाई आगे बढ़ रहे हैं, यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है। साधना से जीवन महान बनता है। साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संसार में कोई सार नहीं है। इसमें अगर कोई सार रूप चीज है तो वह है संयम। संयम ग्रहण कर ये आत्माएँ अपना और सारे जग का कल्याण करेंगी।

मुमुक्ष भाई-बहनों का शानदार अभिनंदन एवं ओघा बँधाई कार्यक्रम आयोजित

महावीर की राह पर बढ़ रहे वीर बन।
वीर पुरुषों को प्यारी ये संयम की डगर।।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, धांधोलाई के विशाल पंडाल में सभी मुमुक्षु भाई-बहनों का महान वीतराग पथ की ओर अपना कदम बढ़ाने हेतु श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ, आरुग्गबोहिलाभं, भीलवाड़ा के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, बालिका मंडल, अरिहंत भवन सुभाष नगर जैन स्थानक एवं अन्य अनेक संस्थाओं व संघों द्वारा भव्य अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में मुमुक्षु भाई-बहनें एवं वीर माता-पिता मंच पर सुशोभित थे एवं मंच के सम्मुख संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, जिला कलक्टर नमित जी मेहता, जीतो के पूर्व उपाध्यक्ष महावीर सिंह जी चौधरी आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगलाचरण, स्वागत गीत एवं दीक्षा गीत क्रमश: समता महिला मंडल, अरिहंत महिला मंडल, सुभाष नगर महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण स्थानीय संघ अध्यक्ष ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोलकाता निवासी संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्‌गार में कहा कि गुरु भगवंतों की कृपा से भीलवाड़ा नगरी में दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है। ममुक्षु परिवार बधाई के पात्र हैं, जो महान वीतराग पथ पर अपनी संतानों को आगे बढ़ा रहे हैं। भीलवाड़ा संघ ने इतिहास रच दिया है।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा आज अभिनंदन है और कल वंदन है। मैं मुमुक्षु भाई-बहनों के उज्ज्वल संयमी जीवन की मंगलकामना करता हूँ। जिला कलक्टर नमित जी मेहता ने कहा कि दीक्षार्थियों ने जो पथ अपनाया है, वो तो हम सोच भी नहीं सकते। दीक्षार्थियों के आत्मबल की जितनी सराहना करें कम है। महान राम गुरु के चरणों में ये संयम मार्ग पर समर्पित होकर धर्म की अलख जगाएँगे। ज्ञानचंद जी सांखला ने विराट दीक्षा आयोजन की बधाई दी।

मुमुक्षु बहन जिया जी कोठारी ने कहा कि चट आज्ञा पट दीक्षा कार्यक्रम से मैं बहुत खुश हूँ। आचार्य भगवन् की कृपा बनी रहे। उपाध्याय भगवन् का मार्गदर्शन मिलता रहे। मुमुक्षु भाई वीरांश जी पितलिया ने कहा कि संयम जीवन श्रेष्ठ जीवन है। गुरुकृपा एवं परिजनों के सहयोग से मैं आज इस पथ पर आगे बढ़ने जा रहा हूँ। मुमुक्षु बहन संगीता जी पितलिया ने कहा कि हमारे परिवार पर गुरु भगवंतों की असीम कृपा है। संयम मार्ग पर सभी को आगे बढ़कर स्व-पर कल्याण की साधना करनी चाहिए। मुमुक्षु बहन करूणा जी गुलेच्छा ने कहा कि संकल्प से सिद्धि होती है। गुरुचरणों में सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। उभय गुरु भगवंतों की कृपा व पारिवारिकजनों के सहयोग व आशीर्वाद के लिए सदैव ऋणी रहूँगी। मुमुक्षु बहन काजल जी नाहटा ने कहा कि आत्मकल्याण के लिए साधना पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। प्रारंभ से ही बालक-बालिकाओं में सुंदर संस्कार एवं चारित्रात्माओं का पावन सान्निध्य प्राप्त होने से जीवन महान व सुंदर बनता है।

सभा का संयोजन करते हुए दीक्षा समिति के संयोजक व महेश नाहटा ने दीक्षार्थियों का परिचय प्रस्तुत किया। अभिनंदन पत्र का पठन समता युवा संघ अध्यक्ष ने किया। जीतो एपेक्स के पूर्व उपाध्यक्ष ने कहा कि आचार्य श्री रामेश के भीलवाड़ा चातुर्मास से अभूतपूर्व धर्म जागृति हुई है। तपस्या व ज्ञान शिविरों का ठाठ लगा हुआ है। युवा शक्ति को अधिकाधिक धर्म-सत्संग से जोड़ने का कार्य करें।

इसी क्रम में उपस्थित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित गणमान्यजनों ने मुमुक्षु भाई-बहनों को अभिनंदन-पत्र, शॉल, माला प्रदान कर तिलक लगाकर स्वागत-अभिनंदन किया। देश के अनेक स्थानों से आगत गुरुभक्तों ने उपस्थित होकर मुमुक्षु भाई-बहनों के आदर्श त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

विराट दीक्षा महोत्सव में पूर्व घोषित 5 एवं तत्काल 1 सहित कुल 6 दीक्षाएँ संपन्न, दो मुमुक्षु बहनों का वरघोड़ा निकाला

दीक्षा की खुशबू जीवन को महकाती है, दीक्षा अज्ञान के अंधेरे को मिटाती है।
एक बार हो जाए संयम भाव का स्पर्श, दीक्षा आत्मा को भव पार कराती है।।

7 अक्टूबर 2024। दयानिधि, कृपानिधान परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक भव्यात्माएँ श्रीचरणों में समर्पित हो रही हैं। आज के पावन दिवस पर पूर्व घोषित 5 दीक्षाओं के साथ ही पाणेठा निवासी मुमुक्षु बहन निमिषा जी मांडोत की भी जैन भागवती दीक्षा संपन्न हुई। महापुरुषों के अतिशय को देखकर सब आश्चर्यचकित रह गए। सभी श्रद्धा से नतमस्तक हो गुरुवर को नमन कर रहे थे।

'**मेरे नाम के आगे राम लगे**' की अनुपम भावना के साथ संयम पथ पर अग्रसर होने वाले 17 वर्षीय मुमुक्षु मुमुक्षु भाई वीरांश जी पितलिया, 50 वर्षीय मुमुक्षु बहन संगीता जी पितलिया, 25 वर्षीय मुमुक्षु बहन करुणा जी गोलेच्छा, 24 वर्षीय मुमुक्षु बहन निमिषा जी मांडोत, 21 वर्षीय मुमुक्षु बहन काजल जी नाहटा एवं 17 वर्षीय मुमुक्षु बहन जिया जी कोठारी सांसारिक सुख-वैभव, मोहमाया, राग-द्वेष एवं सांसारिक उलझनों को छोड़कर कठिन संयम पथ पर आरूढ़ होकर आदर्श बन गए। देश-विदेश से हजारों की संख्या में जैन-जैनेतर भाई-बहन दीक्षा साक्षी बने।

दोपहर 1 बजे नवकार मंत्र जाप के साथ धर्मसभा प्रारंभ हुई। पूर्व घोषित पाँच मुमुक्षु भाई-बहनों के साथ जब गुप्त दीक्षा के लिए मुमुक्षु बहन निमिषा जी मांडोत का भी धर्मसभा में धवल साधु वेश धारण किए हुए प्रवेश हुआ तो हर कोई अचंभित नजर आ रहा था। संपूर्ण सभा '**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है**' आदि जयनादों से गूँज उठी।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''जिनेश्वर भगवान के मार्ग पर चलना बहुत कठिन है। जो वीर होते हैं वे ही इस मार्ग पर चलने में समर्थ होते हैं। महाव्रतों का यह मार्ग राजमार्ग है, जिस पर चलने में कोई खतरा नहीं है। कोई भय व शंका नहीं है। संसार का मार्ग संकीर्ण है। तेरे-मेरे के भाव से मन संकीर्ण हो जाता है। निर्भय होकर चलेंगे तो मंजिल मिलेगी। ऐसी भावना हमारे मन में भी पैदा होनी चाहिए कि वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं भी साधु बनूँगा। हमारी डायरी में वह दिन नोट होना चाहिए कि उस दिन मैं धन्य हो जाऊँगा। यदि अनुकूलता रही तो साधु नहीं तो संसार से निवृत्त होकर साधनामय जीवन जीऊँगा। किंतु संसार का बोझ कँधे पर रखकर नहीं जीऊँगा। अच्छी भावना से चलते रहेंगे तो बीहड़ जंगल को भी पार करने में समर्थ बनेंगे।''** '**वह दिन धन होशी, जब बनूँगा मैं अणगार**' गीत से पूरी सभा गुंजायमान हो गई। दीक्षार्थी भाई-बहनों के आत्मबल की सराहना आचार्य भगवन् ने की।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने दोपहर 2 बजकर 25 मिनट पर दीक्षा विधि प्रारंभ की। मुमुक्षु भाई-बहनों ने दीक्षा हेतु स्वीकृति प्रदान करते हुए शीघ्र ही संयम रत्न प्रदान करने की भावना व्यक्त की एवं सभी से जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना का प्रसंग उपस्थित किया। उपस्थित जनसमूह से दीक्षा की स्वीकृति हेतु

पूछने पर वहाँ उपस्थित परिवारजन, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा के पदाधिकारियों सहित सभी लोगों ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा की अनुमोदना का भाव रखा।

आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते पाठ के उच्चारण के साथ संपूर्ण सावद्य पापकारी क्रियाओं का तीन करण तीन योग से त्याग करवाकर मुमुक्षु भाई-बहनों को नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण क्रमश: इस प्रकार किया गया –

- **मुमुक्षु वीरांश जी पितलिया, हैदराबाद..... नवदीक्षित संत श्री रामवीर मुनि जी म.सा.**
- **मुमुक्षु संगीता देवी पितलिया, हैदराबाद..... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामसेवा श्री जी म.सा.**
- **मुमुक्षु करुणा जी गुलेच्छा, केतुकलां..... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकीर्ति श्री जी म.सा.**
- **मुमुक्षु निमिषा जी मांडोत, पाणेठा..... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनेमि श्री जी म.सा.**
- **मुमुक्षु काजल जी नाहटा, अतरिया रोड..... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकेतु श्री जी म.सा.**
- **मुमुक्षु जिया जी कोठारी, बेंगलुरु..... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामज्योति श्री जी म.सा.**

जैसे ही उपाध्याय प्रवर ने नवीन नामकरण घोषित किए, संपूर्ण पंडाल जय-जयकारों एवं जयवंता-जयवंता की ध्वनि से गूँज उठा। सर्वत्र खुशी की लहर दौड़ पड़ी। केशलुंचन का कार्य आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ।

मासखमण तपस्वी श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रथम सीढ़ी श्रद्धा है और अंतिम सीढ़ी संयम है। श्रद्धा, संयम से ही मोक्ष का द्वार खुलता है। गुरुचरण में दुनिया में सर्वश्रेष्ठ चरण हैं। जो भी तपस्या हुई है गुरुकृपा से संपन्न हुई है।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि शाश्वत सुख की ओर चलने वाले लोगों को कहीं डरने की जरूरत नहीं है। राम गुरु का साथ है, फिर डरने की क्या बात है। हमारे हाथ में सुंदर अवसर है। संसार में उलझकर न रह जाएँ। भगवन् के इंगित इशारों पर चलें और '**मेरे नाम के आगे राम लगे**' की भावना को साकार रूप दें।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री राजन मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री गौरव मुनि जी म.सा., श्री रामहृदय मुनि जी म.सा., श्री रामयश मुनि जी म.सा., श्री रामलक्ष्य मुनि जी म.सा. आदि संतरत्नों ने '**धन धन थे अणगाश, जो अंगाश ये चलिया**' संयम गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामांजना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**मुक्ति की प्यास जगी है**' बधाई गीत प्रस्तुत किया। आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने संयम गीत प्रस्तुत किया। वीर परिजनों द्वारा गुरु भगवंतों के प्रति अहोभाव व्यक्त किया गया।

स्थानीय संघ सहमंत्री एवं महेश नाहटा ने महापुरुषों के अतिशय का बखान किया। दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। देश-विदेश से हजारों की संख्या में गुरुभक्तों ने उपस्थित होकर दीक्षा अनुमोदना का लाभ लेकर कर्मनिर्जरा की।

इससे पूर्व प्रात: 8 बजे मुमुक्षु बहन काजल जी नाहटा एवं मुमुक्षु बहन जिया जी कोठारी का भव्य वरघोड़ा प्रवचन पंडाल से प्रारंभ होकर शिवाजी गार्डन, राजीव गांधी चौराहा, बड़ी पुलिया होते हुए पुन: प्रवचन पंडाल पहुँचा। दोनों बहनें आकर्षक रथ पर सवार होकर सभी का अभिवादन स्वीकार कर रही थीं। मार्ग में अनेक स्थानों पर मुमुक्षु

बहनों का स्वागत, बहुमान किया गया। संपूर्ण मार्ग **'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की'**, **'जग में सुंदर दो ये नाम, जय गुरु नाना जय गुरु राम'**, **'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है'**, **'दीक्षार्थी बहन ने क्या किया, मोह-माया का त्याग किया'** एवं **'संयम जीवन सार है, बाकी सब बेकार है'** आदि जयनादों से गूँज रहा था। साथ ही साथ भजनों व गीतों की मधुर स्वर लहरी से मार्ग में धर्म की अलख जग रही थी। वरघोड़ा में सकल जैन समाज भीलवाड़ा एवं देश के कोने-कोने से आगत धर्मप्रेमी भाई-बहन उपस्थित होकर मुमुक्षु बहन के अद्भुत त्याग की सराहना कर रहे थे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति उत्साहवर्द्धन करने वाली थी। वरघोड़ा पश्चात् अभिनंदन कार्यक्रम एवं अभिनंदन के पश्चात् ओघा बँधाई का कार्यक्रम संपन्न हुआ। समता महिला मंडल, अरिहंत भवन महिला मंडल, सुभाष नगर महिला मंडल, बालिका मंडल ने प्रभु एवं गुरुभक्ति तथा संयम गीतों से समा बाँध दिया।

अनंत पुण्यवानी के प्रभाव से गुरुदर्शन संभव

8 अक्टूबर 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** गीत के संगान के साथ प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन पल-पल बीतता जा रहा है। अवसर का जो लाभ उठा लेता है वह धन्य-धन्य हो जाता है। अनंत पुण्यवानी का उदय होता है तब महान राम गुरु के दर्शन का सौभाग्य मिलता है। चातुर्मास के शेष दिनों में अधिकाधिक धर्म लाभ लेवें। देवलोक के देवता भी णमोत्थु णं के पाठ से भगवान की स्तुति करते हैं। जहाँ भगवान विचरण कर रहे हैं, वहाँ देवता भी जाना चाहते हैं। जो भगवान के दर्शन के लिए जाना चाहते हैं, वे तैयार रहें। विमान से असंख्यात क्रोड़ा-क्रोड़ी योजन की यात्रा क्षणभर में ही पूर्ण हो जाती है। देवलोक का वातावरण सुरम्य होता है। वहाँ देवताओं को पसीना आदि नहीं आता। मनुष्य लोक में आने से देवता को अरुचि होती है। फिर भी तीर्थंकरों के समवसरण में आते हैं, दर्शन करते हैं। दुर्लभ बोधि लोग भगवान का सान्निध्य प्राप्त नहीं कर पाते। हमें भी राम गुरु के दर्शन-सेवा का अधिकाधिक लाभ लेकर जीवन धन्य बनाना है।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि 108 अठाई का आह्वान पूरा कर इसे यादगार बनाना है। सपरिवार प्रवचन का लाभ उठाना है। श्री गगन मुनि जी म.सा. के 30 उपवास (मासखमण) का पारणा गुरुकृपा से सानंद संपन्न हुआ। पूर्व में आपश्रीजी ने 1 से 21 तप की लड़ी, 4 अठाई, 9 दो बार, 6 सात बार, 7 दो बार, 100 तेला, 250 पच्चक्खाण, 27 माह एकांतर आदि तप पूर्ण किए हैं। संपूर्ण सभा धन्य तपस्वी, धन्य तपस्या के स्वरों से गूँज उठी।

बिखरे हुए जीवन को सीमित करें

9 अक्टूबर 2024। प्रात: मंगल प्रार्थना के साथ दिन का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरु के भक्त होकर भी बारह व्रतों को ग्रहण नहीं किया तो क्या किया? ये बारह व्रत श्रावक जीवन का सार हैं। अपने बिखरे हुए जीवन को सीमित करो। जब संतोष आ गया तो बिना दवाई के भी नींद आ जाती है। हम जितना संबंधों को विस्तारित करेंगे उतना ज्यादा दु:ख बढ़ेगा। जीवन में सिर्फ गुरु, भगवान और मैं का महत्त्व है। खूब जमेगा रंग जब होंगे गुरु, भगवान और मैं। इस दुनिया को मैंने देख लिया। जिस पर भरोसा किया उसने धोखा दिया। भगवान मुझे आप पर पूरा भरोसा है, आप मेरा साथ नहीं छोड़ेंगे। गुरु के चार शिष्य - 1. कोरा कागज, 2. आधा भरा कागज, 3. पूरा भरा कागज एवं 4. पेन के समान होते हैं। प्रभु से यही कामना है कि हमें धन-दौलत नहीं चाहिए, अपितु आपकी वीतरागता, समभाव और निष्पृहता प्रदान करें। अरिहंत भगवान के गुणगान करता हुआ जीव उत्कृष्ट रसायन आए तो तीर्थंकर नाम कर्म का बंध करता है। गुरु के हम ऐसे शिष्य बनें जो

संकल्प के साथ कह सकें कि जैसा आप बोलेंगे वैसा हम करेंगे।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने '**आया कहाँ से, कहाँ है जाना**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि इस असार संसार से सार ग्रहण करना है। स्थानीय भाई-बहनों व महिला समिति ने '**जिनशासन के वीरों को वंदन है अभिनंदन है**' गीत प्रस्तुत किया। श्री टोमचंद जी राखेचा, रेंगाडबरी के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

श्री इभ्य मुनि जी म.सा. ने इस चातुर्मास में अपनी सातवीं अठाई प्रारंभ की। दोपहर में श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्त्व का बोध प्रदान किया।

जो अनन्य को देखता है वो अनन्य में रमण करता है

10 अक्टूबर 2024। '**सब बोलें जय-जयकार**' भक्ति गीत के साथ प्रार्थना की गई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो अन्य को देखता है वो अन्य में रमण करता है। अन्य यानी शरीर के पुद्गल, जो नाशवान हैं। हमें क्या देखना है और हम क्या देख रहे हैं, इस पर चिंतन करें। अनन्य यानी आत्मा। जो आत्मा को देखता है वह आत्मा में रमण करता है। हे भगवन्! मुझे ऐसी दृष्टि दो कि मैं जब भी देखूँ सत्य को देखूँ, परम तत्त्व को देखूँ। सबसे परे है आत्मा। मैं राग-द्वेष नहीं, समभाव को देखूँ। इस आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति है। मैं अपनी शक्ति को पहचान सकूँ और प्रकट कर सकूँ। भगवान महावीर के कानों में कील ठोके गए, पैरों में खाना बनाया गया। अन्य कई उपसर्ग आए, फिर भी विपरीत क्षणों में भी वे समभाव में रहे क्योंकि भगवान अनन्य को देख रहे थे। आत्मा ही परमात्मा है। आत्मा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहित है। आत्मा को दिखाया नहीं जा सकता, केवल अनुभूति की जा सकती है।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि '**इंगियागार सम्पन्ने**' गुरु के इंगित इशारों को समझना शिष्य का विनय है। गुरु की आज्ञा, निर्देश का पालन करना है एवं गुरु के समीप रहना है। अविनीत शिष्य गुरु के आज्ञा-निर्देश की पालना नहीं करता। मन, वचन, काया के समीप नहीं होने वाला अविनीत शिष्य है। अविनीत शिष्य सदाचार के बजाय दुराचार का सेवन करने वाला होता है। महिला मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

जन्म-मरण के चक्र का कारण नशा

11 अक्टूबर 2024। मंगलमय प्रार्थना में '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' के साथ प्रार्थना की गई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जन्म और मृत्यु के बीच हम कुछ ऐसा कार्य करें, जिससे जीवन यादगार बन जाए। आज किसी को बचपन का नशा है, किसी को जवानी का नशा है, किसी को बुढ़ापे का नशा है, किसी को पैसा कमाने का नशा है, किसी को पैसा उड़ाने का नशा है, किसी को खाने और खिलाने का नशा है, किसी को मोबाइल, टी.वी. का नशा है, किसी को सेल्फी का नशा और किसी को क्रोध, मान, माया और लोभ का नशा है। नशे में कौन नहीं है ये बताओ जरा? इस नशे के कारण न जाने कितने पाप कर्मों का बंध करके जन्म-मरण के चक्र में भटक रहे हैं। हमारे अंदर शक्ति का भंडार है। उस शक्ति को श्रेष्ठ कार्यों में लगाएँ। श्रेष्ठ विचार और आचरण को जीवन में प्रतिस्थापित करें।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मोक्ष में जाने के लिए विनय की आवश्यकता होती है। जो शिष्य अपना कल्याण चाहता है वह स्वयं को विनयशील बनाए। अविनय, दुर्गति और दोष का कारण है। जैसी हमारी संगत होगी, वैसी हमारी रंगत हो जाएगी। विनीत शिष्य के अंदर अनुशासन का होना बहुत जरूरी है। गुरु द्वारा अनुशासित

किए जाने पर शिष्य क्रोध नहीं करे।

महिला मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दीपावली के अवसर पर पटाखे जलाने का त्याग कई भाई-बहनों व बच्चों ने लिया। समता युवा संघ, भीलवाड़ा की ओर से आयोजित नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर में डॉ. श्रेणिक जी नाहटा (दुर्ग) द्वारा अनुपम सेवाएँ दी गईं। परम गुरुभक्त श्री बाबूलाल जी कोठारी, रतलाम के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। भीलवाड़ा के बालक-बालिकाओं का त्रिदिवसीय शिविर में श्री राजन मुनि जी म.सा., साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. ने श्रद्धा से साधना व धैर्य आदि विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। प्रवीणा जी सेठिया (रतलाम) ने निडरतापूर्वक समस्याओं के समाधान के टिप्स बताए। '**कौन बनेगा धर्मवीर**' कार्यक्रम हुआ।

निंदा-प्रशंसा में समभाव रखें

12 अक्टूबर 2024। '**हे प्रभु यंच यश्मेष्ठी दयाला**' भजन के माध्यम से प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने '**लाखों को याद लगाया भगवान तुम्हारी वाणी ने**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जानने का मतलब क्या है? इंद्रियों के विषयों को जानने के बाद राग-द्वेष नहीं करना। भिक्षु देखे, सुने, सूँघे, पर आसक्ति न करे। भगवान महावीर की अद्भुत साधना में इंद्रियों का निग्रह व समभाव गजब का था। अनार्य देश में जाकर भी प्रतिकूल अवस्था में दर्द महसूस नहीं किया। समभाव के साथ विचरण करते हुए आचार्य भगवन् का आंतरिक वैभव सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। निंदा, प्रशंसा में सदैव समभाव रखते हैं। हमारी कोई निंदा, बुराई करे तो हम कितना शांत रह पाते हैं, चिंतन करें। '**वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' कथा भाग चारित्र का सुंदर वर्णन आपश्रीजी ने किया।

साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। महत्तम दैनिक उपासना के प्रत्याख्यान हुए। महापुरुषों के सान्निध्य में मोक्षार्थी शिविर का आगाज हुआ, जिसमें 200 से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लेकर अपना जीवन सुसंस्कारित किया। पूर्वांचल, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, दक्षिण, मध्य प्रदेश क्षेत्र के बालक-बालिकाओं ने धर्म उत्साह का परिचय दिया।

गहरी एकाग्रता से सिद्धि की प्राप्ति

13 अक्टूबर 2024। रविवारीय समता शाखा आराधना में भाग लेकर सैकड़ों गुरुभक्तों ने आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम से जीवन धन्य बनाया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने '**लाखों को याद लगाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि अध्यात्म की यात्रा का शुभारंभ समर्पणा से होता है। देव, गुरु, धर्म एवं जिनशासन के प्रति हम कितने समर्पित है, यह आत्मचिंतन का विषय है। हमारी श्रद्धा व आस्था कितनी गहरी है? गहरी एकाग्रता से सिद्धि की प्राप्ति होती है। हमने अनंत भव गँवा दिए हैं। अब इस भव को सार्थक करना है। व्यर्थ की बातों में, विवादों में समय को बर्बाद नहीं करना है, अपितु एकाग्रतापूर्वक साधना में लिप्त होना है। हमारा समय मोबाइल, टी.वी., क्रिकेट देखने में, इधर-उधर की चर्चा में व्यर्थ जा रहा है। आचार्य भगवन् ने वर्षों तक नाना गुरु की निष्काम भाव से सेवा की। आज वे स्वयं का एवं जगत् का कल्याण कर रहे हैं।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें संसार के कार्यों में समय लगाने के बजाय आत्मिक कल्याण की दिशा में समय का अधिकाधिक नियोजन करना चाहिए। समता महिला मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

संघ मंत्री ने त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। दीपावली पर पटाखे नहीं जलाने का त्याग कई भाई-बहनों ने लिया।

नीदरलैंड (यूरोप) से अरिहंत कुमार जी बोथरा, तृप्ति जी बोथरा, अरोही बोथरा आदि ने गुरुदर्शन का लाभ लिया। ब्यावर संघ ने गुरुचरणों में विनती प्रस्तुत की।

जिनवाणी श्रवण दुर्लभ है

14 अक्टूबर 2024। मंगलमय प्रार्थना पश्चात् राजकीय प्राथमिक विद्यालय में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने '**लाखों को याद लगाया है**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जिनवाणी शाश्वत है। जिनवाणी के माध्यम से अनेक आत्माओं ने अपनी आत्मा को भावित किया है। भगवान की वाणी सभी प्राणियों के लिए आश्रयभूत है। ऐसा कोई काल नहीं जब यह वाणी नहीं थी। केवली भगवान एक समय में तमाम चीजें जानते हैं। गुप्त को भी जानते हैं। जो हम बोलते हैं वो तो जानते ही हैं, जो हम नहीं बोलते वो भी जानते हैं। श्रुत केवली 14 पूर्व के धरातल पर जानेंगे, पर केवली भगवान साक्षात् जान रहे हैं। श्रुत केवली आगम के अनुसार कहते हैं जैसे मैंने अपने गुरु से सुना है। जब शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण का भाव होता है तब गुरु का नाम मुँह से निकलता है। आपने भी कई बार गुरुदेव के मुख से नाना गुरु का नाम सुना होगा। जिनवाणी सुनने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होगा। जिनवाणी सुनना दुर्लभ है। अनेक लब्धियों के ज्ञाता गौतम स्वामी भी वाणी सुन सकते हैं, फिर मैं तो एक तुच्छ प्राणी हूँ। कषायों से भरा हुआ हूँ। जब इस भाव से श्रवण करोगे तो अलग आनंद की प्राप्ति होगी। एक-एक मंत्र चमत्कार करता है। एक-एक सूत्र, मंत्र रहस्यों से भरे होते हैं। गणधरों ने जो रचना की उसको सुनकर अनेक जीवों ने आत्मा को जगाया है। '**वैराग्य ज्योति को प्रकट करना है ज्ञानालोक से**' में संयति राजा का सुंदर वर्णन आपश्रीजी ने फरमाया।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सपने वो नहीं होते हैं जो नींद में आते हैं। सपने तो वो होते हैं जो सोने नहीं देते। गुरु म.सा. को देखने से निहाल नहीं होंगे। गुरु म.सा. के हृदय में हमारा स्थान हो गया तो निहाल होंगे। अगर हमारे मन में गुरुजनों के प्रति अश्रद्धा या विपरीत भाव आते हैं तो भव भटक जाएँगे और अनन्य आस्था व श्रद्धा है तो भवसागर पार करने वाले बन जाएँगे। गुरु की आज्ञा का पालन ही सच्ची समर्पणा है।

महिला मंडल ने '**जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है**' गीत प्रस्तुत किया। जितनी उम्र है उतने नवकार गिनने का संकल्प अनेक भाई-बहनों ने लिया। मोक्षार्थी शिविर समयबद्धता व धार्मिक क्रियाओं के साथ जारी है।

नवदीक्षितों की बड़ी दीक्षा सोल्लास संपन्न

15 अक्टूबर 2024। '**सुबह और शाम प्रभु जी के नाम की फेरो एक माला**' भजन के साथ प्रातःकालीन प्रार्थना में भक्ति की गई। युगनिर्माता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में नवदीक्षित संत श्री रामवीर जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामसेवा श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकीर्ति श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनेमि श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकेतु श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामज्योति श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा धर्मोल्लास पूर्ण वातावरण में संपन्न हुई।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासन में दीक्षार्थी को पहले सामायिक चारित्र दिया जाता है, फिर उसके बाद छेदोपस्थापनीय चारित्र में उपस्थित किया जाता है। बीच के 22 तीर्थंकरों के समय एकमात्र सामायिक**

चारित्र दिया जाता है। 22 तीर्थंकरों के समय साधुओं को उभयकाल प्रतिक्रमण करना अनिवार्य नहीं था। जब दोष लगे उसी समय प्रतिक्रमण किया जाता था। प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासन में उभयकाल प्रतिक्रमण जरूरी है। अभी एक समय भी प्रतिक्रमण चूक गए तो उसी दिन चौविहार उपवास करना जरूरी होता है। सामायिक चारित्र में सावद्य योगों का त्याग कराया जाता है। मुख्य रूप से मन, वचन, काया हमें कर्म बंधन की ओर ले जाने वाले होते हैं और कर्मों की निर्जरा करने वाले भी होते हैं, जिस कारण से हिंसा होती है, छल-कपट, प्रपंच होता है। मन में बुरे विचार, वचन से बुरे शब्द, काया से दूसरों को प्रताड़ना सावद्य मानी जाएगी। मन में किसी के प्रति कोई बुरा विचार नहीं आना, अपनी आत्मा का अनुभव करना, अपने दोषों को देखना, समता भाव में रहना ही निरवद्य योग है। मन जितना पवित्र होगा उतनी ही आत्मा की अनुभूति होगी। फिर उसको बाहर की वस्तु प्रिय नहीं लगती। संयम जीवन की आराधना में जब मन लीन हो जाता है तब उसमें आनंद आने लग जाता है। फिर संसार का वैभव फीका लगने लगता है। आनंद की प्राप्ति अहिंसा, संयम और तप के माध्यम से हो सकती है। किसी भी जीव की विराधना नहीं करना, न करवाना और न अनुमोदना करना। इस प्रकार की जब प्रतिज्ञा ली जाती है तब सारे प्राणियों को अभयदान देने का प्रसंग बनता है। कभी मिथ्या भाषा का प्रयोग नहीं करना। झूठ बोलने वाले पर कोई विश्वास नहीं करता है। बिना अनुमति के कोई चीज नहीं लेना। ब्रह्मचर्य – आत्मा में रमण करना। यदि मन विचलित हो रहा हो तो तपस्या करो, परिग्रह पाप का मूल है। किसी पर भी आसक्ति का भाव नहीं होना। इन पाँच महाव्रतों की पालना के लिए नवदीक्षितों को सजग रहने की आवश्यकता है। सारे कार्य यतना से करने चाहिए। यतना साधु धर्म का मूल है। यतना धर्म की यात्रा है।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने बड़ी दीक्षा विधि पूर्ण कराई। श्री दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षितों को हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह का तीन करण तीन योग से त्याग करवाकर पंच महाव्रतों में आरूढ़ किया। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दीक्षा देखना तब सार्थक होगा जब स्वयं दीक्षा लेंगे। मन अगर संयम में रमण करता है तो यही मुक्ति का मार्ग है। आराध्यदेव का हाथ मेरे सिर पर हो, सदैव ही ऐसे उच्च भावों में रमण करें।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने विनय गुण का महत्व बताते हुए फरमाया कि जैसे चुंबक लोहे को खींच लेता है, उसी प्रकार एकमात्र विनय गुण की आराधना करने से अन्य गुण स्वत: ही खिंचे चले आते हैं।

नवदीक्षितों ने अपने संकल्प पत्र में दोहराया कि आचार्य भगवन्! आपने असीम कृपा करके दीक्षा प्रदान कर पावन चरणों में स्थान दिया है। हम शुद्ध संयम पालन करते हुए पाँच समिति तीन गुप्ति का ध्यान रखेंगे। सदैव आपश्री के चरणों में उपासना की भावना है। आपश्री जहाँ भी रखेंगे वहाँ आनंद है। सेवा का महान अवसर मिले। आज्ञा आराधना में सदैव तत्पर रहेंगे। कषाय व इंद्रिय विजय प्राप्त कर हम मुक्ति को वरण करें, यही मंगलकामना है।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा., श्री रामलक्ष्य मुनि जी म.सा. एवं श्री रामयश मुनि जी म.सा. आदि ने '**अहो संयम, अहो संयम**' संयम गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामांजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामनिधि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**तेश हाथ हो सिर पर मेरे**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री विरल श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '**हुक्म क्षितिज के सूर्य चंद्र को शत शत आज बधाते हैं, सदा स्वस्थ दीर्घायु गुरु हों यही भावना भाते हैं**' गुरुभक्ति से सराबोर गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**धन्य है जिनवाणी गुरुवर**' गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग प्रत्याख्यान हुए। दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। मोक्षार्थी शिविर के बालक-बालिकाओं ने हर रविवार को सामायिक करने का प्रत्याख्यान लिया। प्रतिदिन दोपहर में उभय गुरु भगवन् के सान्निध्य में आगम वाचनी, समाचारी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। धर्मनगरी भीलवाड़ा धर्म तप आराधना से सराबोर हो रहा है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्री गगन मुनि जी म.सा.	मासखमण	श्री इभ्य मुनि जी म.सा.	9 उपवास
श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा.	9 उपवास	(इस चातुर्मास में 7वीं अठाई पूर्ण)	

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	किशोर जी पद्मा जी भंसाली-रायपुर, विजय सिंह जी पुखराज जी गोलछा-गुवाहाटी, शांता देवी भूरा-देशनोक, कनकमल जी मंजू जी-डूंगला, जगतुराम जी शकुन बाई साइ नुस्का-खैरागढ़, भंवरलाल जी कंचन बाई गन्ना-सूरत, प्रकाश जी सुनीता जी गुप्ता, अशोक जी चपलोत-निम्बाहेड़ा, जयकुमार जी गोलछा-गंगाशहर, स्मिता जी कुचेरिया-धुलिया, महावीरचंद जी रामप्यारी जी चौपड़ा-बालोतरा, विजय जी तातेड़-जोधपुर, पद्मचंद जी जैन-हिंडौन सिटी, रोशनलाल जी ढेलीवाल, धनलाल जी ओस्तवाल-बीटा, अमरचंद जी सेठिया-मुंबई, रमेशचंद्र जी गायत्री देवी जैन-सवाई माधोपुर, अशोक जी ललिता जी कवाड़-मोरवन, शांतिलाल जी पुष्पा देवी जारोली-मोरवन, लक्ष्मीचंद जी सोनी-मोरवन, शांतिलाल जी कुमुद देवी लोढ़ा-इंदौर, भंवरलाल जी पुष्पा देवी सुराणा-बीकानेर, राकेश जी जैन-मेरठ, हिम्मत सिंह जी-नानावटी, धनराज जी ओस्तवाल, प्रमिला जी नाहटा-रोड अतरिया
संवर	**आजीवन –** स्नेहलता जी मुरड़िया
	150 – अंजना देवी पोखरना-बेगूँ
	100 – कुशाल जी मंजू जी बाफना (100 पक्की नवकारसी भी)
गाथा का स्वाध्याय	**दो लाख –** पद्मा जी धोका-बालाघाट (200 एकासन भी), हीराबाई खींचा-रायपुर
	सवा लाख – ओमप्रकाश जी बरड़िया-लूणकरणसर (1100 सामायिक भी)
उपवास	**17 –** लक्ष्मीचंद जी सोनी-मोरवन
	11 – सुरेंद्र जी संखलेचा, कैलाश जी सांखला
	9 – शिव जी डांगी
	अठाई – वर्धमान की कटारिया, दिनेश जी कोठारी, कविता जी मेहता, रजनी जी दुग्गड़, मुकेश जी नाहर-इंदौर, सुषमा जी नाहर-इंदौर
सामायिक	**1500 –** पुष्पा जी बरमेचा

अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी...

-महेश नाहटा

अपने आचार्यदेव को जानें

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष को '**महत्तम शिखर**' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पाठकों को आचार्यश्री के जीवन से परिचित कराने के लिए उनका जीवन चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह चित्रण 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से प्रारंभ हुआ है, जो 12 माह तक श्रमणोपासक के समाचार अंकों में प्रकाशित किया जाएगा। इसके अंतर्गत आचार्यदेव का संपूर्ण जीवन- **बाल्यकाल, युवावस्था, मुनि प्रवर, युवाचार्य एवं आचार्य अवस्था** आदि विभिन्न पड़ावों का वर्णन किया जाएगा। इन पड़ावों के आधार पर पाठकों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाएँगे, जिनके उत्तर पाठकों को भरकर भिजवाने होंगे। इस शृंखला के अंतिम पड़ाव के रूप में **फरवरी 2025** के अंक में वर्षभर में दिए गए संपूर्ण चित्रण पर एक मुख्य प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें वर्षभर में प्रकाशित विभिन्न पड़ावों पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। अत: पाठकों से आग्रह है कि 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाशित संपूर्ण सामग्री संग्रहित करके रखें।

आचार्यश्री जी की विचार वाहिनी

परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. सिर्फ एक नाम या एक हस्ती नहीं हैं। आपश्री जी तो एक यात्रा हैं, एक प्रेरणा हैं, एक महत्तम व्यक्तित्व हैं। आपका व्यक्तित्व आप द्वारा किए गए महत्तम कृतित्व का सार है। आचार्यश्री ने स्वविवेक, दूरदृष्टि एवं प्रबल पुरुषार्थ से न केवल अपने गुरु का दिल जीता, वरन् जन-जन के हृदय में भी समा गए। पुत्र भले ही सारा कार्य सम्हालता हो एवं पिता भले ही वृद्ध हो, किंतु पिता की उपस्थिति मात्र ही उसके लिए एक संबल हुआ करती है। आचार्यश्री के जीवन का नया युग प्रारंभ हो गया था। आचार्यश्री का प्रथम चातुर्मास जयपुर में हुआ। उस दिन आपश्री जी के 9 की तपस्या थी।

गुरु की आराधना, पूजा, भक्ति कैसे की जाए? जिनको हम अपना आराध्य मानते हैं, उन्हें ऊँचे स्थान पर प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। ऊँचे स्थान का आध्यात्मिक अर्थ है हमारे विचारों में उन्हें ऊँचा स्थान दिया जाना चाहिए। वह स्थान इतना ऊपर हो कि जिसका स्पर्श हमारा अहंकार न कर पाए। गुरु को ऊँचे स्थान पर प्रतिस्थापित करने के बाद तुम्हारे पास जो भी है, उन्हें अर्पित कर दो।

आचार्यश्री ने अपनी यात्रा की दिशा गुरु के इंगित इशारों पर प्रारंभ कर दी। गुरु की आज्ञाओं को शिरोधार्य कर परम पूज्य आचार्य प्रवर ने युवाचार्य काल से अब तक 411 दीक्षाएँ प्रदान की हैं। कई आगमों के संशोधन का कार्य कर सत्य का शंख बजाया है और भ्राँतियों की परंपरा को तोड़ा है। कई जगह विचरणशील रहते हुए सांप्रदायिक वाद-विवाद सुलझाए। आपश्री ने दुर्गम स्थलों पर विहार, विचरण व चातुर्मास किए हैं। ऐसे अनेक कार्य हैं जिनकी व्याख्या कलम द्वारा कर पाना असंभव है।

गुरु ने क्या किया, कैसे किया, क्यों किया यह जानना आवश्यक नहीं है। गुरु तो बस गुरु हैं, जिन्हें जानना, समझना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। क्योंकि गुरुता अहसास है और भक्त की भक्ति विश्वास है।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ एवं सहयोगी इकाइयों – श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति व श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ ने परम पूज्य आचार्य प्रवर को अपना आराध्य मानकर उनके इंगित इशारों पर चलने का प्रबल पुरुषार्थ किया है। भक्त और भगवान की उक्ति को चरितार्थ करते हुए गुरु के एक इशारे पर कार्य के संपादन में जुट जाना तीनों इकाइयों का परम लक्ष्य रहता है।

सुंदर विचार, सुंदर कथन क्रिया के अभाव में वैसे ही प्रतीत होते हैं जैसे नकली मोती। क्रिया का समन्वय हो तो ये विचार अमूल्य हो सकते हैं। विचारों को कथन तक ही नहीं रखते हुए उन्हें क्रिया में डालने का प्रयत्न करना चाहिए। मात्र विचार, ज्ञान उस अपंग के समान है, जो देख तो सकता है कि आग लग गई है, किंतु पंगुता के कारण उससे बचने हेतु दूर नहीं जा पाता। दोनों का समन्वय ही दोनों को मूल्यवान बनाता है।

विरले महापुरुषों के विचार भी विरले ही होते हैं। उनके विचार ही उन्हें महान बनाते हैं और अन्य लोगों को मार्ग दिखाते हैं। आचार्य श्री रामेश के अनेक विचारों की क्रियान्विति से समाज में आमूलचूल परिवर्तन आया। अपने दैनिक जीवन व अन्य क्रियाकलापों से पूज्यवर शुद्ध साध्वाचार के अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर चुके हैं। उन्हें साध्वाचार के नियमों में कोई समझौता स्वीकार्य नहीं है।

आचार्य बनने के पश्चात् आपश्री ने अनेक दुर्गम स्थानों पर चातुर्मास किए, जहाँ पर कल्पनीय स्थान, दोषरहित गोचरी आदि के अनेक परीषह आए। आचार्यश्री ने अपूर्व निर्णय लेकर इतिहास में पहली बार पूर्वांचल की ओर कदम बढ़ाया। अनेक परीषहों का सामना कर पश्चिम बंगाल पहुँचे। शुद्ध साध्वाचार की मशाल को जरा भी मंद पड़ने नहीं दिया। परिणामस्वरूप लोगों ने साधु जीवन के कठोर नियमों को जाना और उन्हें अपने जीवन में उतारा।

कोलकाता से आचार्यश्री ने छत्तीसगढ़ की दिशा में विहार किया। दुर्ग (छ.ग.) में आचार्य श्री रामेश के प्रवचनों से प्रेरित होकर मध्य प्रदेश शासन के पूर्व गृहमंत्री हिम्मत जी कोठारी के बड़े भाई श्री श्रीचंद जी कोठारी चलते प्रवचन में दीक्षा प्रदान करने की विनती करते हुए खड़े हो गए। तुरंत उत्कृष्ट भाव जानकर उन्हें दीक्षित किया गया। इस चातुर्मास में कई और दीक्षाएँ भी हुईं तथा 89 मासखमण हुए। शुद्ध साध्वाचार का विचार प्रेरणा स्वरूप अंकुरित हुआ।

छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, विशाखापट्टनम् तक विचरण कर आचार्यश्री राजनांदगाँव में धर्म की ज्योत जलाने हेतु पहुँचे। यह विचरण सबसे अधिक परीषहयुक्त विचरण था। राजनांदगाँव के इस विहार के दौरान आचार्यश्री ने ऐसी सड़कों पर विहार किया, जिनके नीचे बारूदी सुरंगें बिछी हुई थीं। इतना ही नहीं, भारत–पाकिस्तान के शीतयुद्ध के क्षणों में आपश्रीजी पंजाब के उन क्षेत्रों में विचरणशील थे, जो पाक सीमा से कहीं–कहीं तो मात्र 3–4 किमी. दूर थे, परंतु कहीं भी गोचरी लेने के नियमों से समझौता नहीं किया। उसी का नतीजा है कि वर्तमान में साधु–साध्वी उत्कृष्ट गवेषणा किए बिना कहीं से आहार नहीं लेते हैं। अत: निर्दोष आहार लेना व प्रासुक आहार बहराना साधुमार्गी संघ के श्रावकों व चारित्रात्माओं के रोम–रोम में बसा हुआ है।

इसी शृंखला में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। प्रवचन सभा में प्राय: कुछ जन बिना मुखवस्त्रिका के तो कुछ पुरुष बिना सामायिक वेशभूषा के सामायिक ग्रहण कर लेते थे। जब बिना स्कूल की वेशभूषा के एक सामान्य से विद्यालय में प्रवेश नहीं मिलता, तो फिर यह तो मोक्ष का विद्यालय है। यहाँ बिना वेशभूषा के कोई व्यक्ति कैसे बैठ सकता था! आचार्य प्रवर का एक इशारा हुआ और आज पूरा प्रवचन पंडाल धवल वस्त्रधारियों से भरा नजर आता है। बिना मुखवस्त्रिका के प्रवचन में बैठना तो दूर कोई व्यक्ति प्रवचन पंडाल में भी प्रवेश नहीं करता है।

आचार्यश्री के विचार जितने अनूठे हैं उतने ही जनहित हेतु भी हैं। आचार्यश्री की साधना का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग जन-जन के आध्यात्मिक विकास हेतु चिंतन है, जो निरंतर चलता रहता है। इन चिंतनों का अनुसरण श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ सहित सहयोगी इकाइयाँ आयामों के रूप में कर रही हैं, जिनके अभूतपूर्व परिणाम पूरे संघ में परिलक्षित हो रहे हैं। आचार्यश्री के विचार जनहित, संघ और राष्ट्रहित में सदैव परिवर्तन व सुधार हेतु गतिमान रहते हैं।

प्रश्नावली

संक्षिप्त में उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1. आचार्यश्री ने किन तीन गुणों द्वारा न केवल अपने गुरु का दिल जीता अपितु जन-जन के हृदय में समा गए?

प्रश्न 2. ऊँचे स्थान का आध्यात्मिक अर्थ बताइए।

प्रश्न 3. आचार्यश्री ने युवाचार्य काल से अब तक कितनी दीक्षाएँ प्रदान की हैं?

प्रश्न 4. श्री अ.भा.सा. जैन संघ की सहयोगी इकाइयों के नाम बताइए।

प्रश्न 5. क्रिया के अभाव में विचारों को किसके समान कहा है?

प्रश्न 6. आचार्यश्री द्वारा किया गया एक ऐसा कार्य जो इतिहास में पहली बार हुआ है?

प्रश्न 7. छत्तीसगढ़ चातुर्मास में हुए दो अविस्मरणीय प्रसंग बताइए।

प्रश्न 8. किन-किन क्षेत्रों का विचरण कर आचार्यश्री राजनांदगाँव पधारे?

प्रश्न 9. मोक्ष का विद्यालय किसे कहा है?

प्रश्न 10. आचार्यश्री के विचार किन तीन क्षेत्रों में हितकारी हैं?

उत्तर भिजवाने हेतु WhatsApp No. : 9314055390
Email : shramanopasak @sadhumargi.com

अंतिम तिथि
25 नवंबर 2024

प्रभु महावीर ने पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति के पालक को साधु कहा है। दशवैकालिक सूत्र में साधु का आचार निरूपण करते हुए उसकी अहिंसक वृत्ति का प्रतिपादन इस प्रकार किया है कि समाधिवान संयमी साधु सचित्त पृथ्वी, भित्ति, शिला, मिट्टी के ढेले आदि का तीन करण, तीन योग से भेदन नहीं करे। संयमी साधु शीत, ओले, वर्षा, हिमादि के सचित्त जल का तीन करण, तीन योग से सेवन न करें, किंतु वर्ण, गंध, रस, स्पर्श परिवर्तित धोवन या उष्ण जल का सेवन करें। संयमी साधक अंगार, अग्नि, चिनगारी एवं अलात अग्नि-जलती हुई लकड़ी की अग्नि को तीन करण, तीन योग से न जलाए, न बुझाए, न परस्पर घर्षण करें। इससे स्पष्ट है कि विद्युत भी बादर तेजस्काय युक्त है। अत: साधु को विद्युत संचालित पंखे, माइक, एअर कंडीशनर, कूलर, टेलीविजन आदि-आदि का भी तीन करण, तीन योग से सेवन नहीं करना चाहिए।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

विविध समाचार

राम चमकते भानु समाना

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

भूपालपुरा, उदयपुर। शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में जुहार जैन भवन में चातुर्मास का ठाठ लगा हुआ है। 21 से 23 सितंबर को त्रिदिवसीय '**रिद्धि से सिद्धि की यात्रा**' शिविर के आयोजन में 102 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। इसी के साथ ही तप-त्याग की भी होड़ लगी हुई है। अब तक अजय जी दक 60, पिंकी जी मेहता 31, आनंद जी चोरड़िया 30 के प्रत्याख्यान हुए एवं पर्युषण के दौरान 35 से अधिक अठाइयाँ हुईं। कुसुम जी डांगी ने सिद्धि तप किया। तप अनुमोदनार्थ 31 अगस्त को उपवास दिवस एवं 15 सितंबर को सामूहिक एकासना दिवस आयोजित किया गया, जिसमें अनेक तपस्वियों ने भाग लिया।

पर्वाधिराज पर्युषण के दौरान आठों ही दिवस सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखंड नवकार मंत्र जाप किया गया। साध्वी श्री निर्वेद श्री जी म.सा. ने अंतकृद्दशांग सूत्र का वाचन किया। साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. ने आठों ही दिवस अलग-अलग विषयों पर प्रवचन फरमाए। साध्वी श्री सौम्यसुगंधा श्री जी म.सा. ने हुक्मसंघ के आचार्यों की गौरवगाथा फरमाई। दोनों काल प्रतिक्रमण पश्चात् साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता। विभिन्न प्रतियोगिताओं में अनेक जनों ने भाग लिया। 9 सितंबर को सामूहिक क्षमायाचना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **– यशवंत कटारिया**

बड़ीसादड़ी। शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में राम महिमा महोत्सव के अंतर्गत समता भवन में अनेकानेक तप-त्याग, धर्म-ध्यान गतिमान हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना, प्रवचन, दिन व रात्रि में कीर्तन एवं महावीर गाथा आदि कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। आपश्रीजी के सान्निध्य में **परिवार परिचय**, **परवरिश**, **जैन कपल** आदि शिविर लगाए गए। तप के क्रम में 40 – अंजू जी लोढ़ा, 31 – चंदनबाला जी मेहता, सुनीता जी मेहता, सरोज जी मेहता, सुधा जी मेहता, पवन जी नलवाया, मीना जी रांका, आशा जी मेहता, रेखा जी रातड़िया, 30 – विजय कुमार जी सांड, क्षेमलता जी भंडारी, प्रमिला जी मेहता, 16 – आयुषी जी नलवाया, 15 – आदर्श जी मारू, आंचल जी कोठारी, 11 – मोनिका जी मेहता, राकेश जी मेहता, नौ की 19, अठाई की 21 एवं पाँच की 31 तपस्याएँ हुईं। एकासन का मासखमण, षट्रस त्याग, तेले, उपवास, एकासना, आयंबिल, लगभग 1500 संवर आदि भी हुए। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. बालक-बालिकाओं को ज्ञान-ध्यान सीखा रहे हैं। **– राजमल भंडारी**

निकुंभ। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व पर अपूर्व धर्माराधना हुई।

सेवंत जी सीमा जी सोनी ने सजोड़े 15, अठाई– शांता जी सहलोत, राजेश जी मेहता, आशा जी मेहता के अलावा 45 तेले, 3 पंचोला सहित उपवास, आयंबिल,

एकासना आदि तपस्याएँ हुईं। विभिन्न प्रतियोगिताओं में सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। संवत्सरी महापर्व पर 425 सामूहिक एकासन हुए। **– महावीर मेहता**

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

देशनोक। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6 जैन जवाहर मंडल में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर में ज्ञानचर्चा आदि से स्थानीय एवं आगत गुरुभक्त लाभान्वित हो रहे हैं। पर्युषण में दयाभाव, प्रतियोगिताएँ, संवर, पौषध आदि का क्रम जारी रहा। 31 – सुश्री कुमकुम बोथरा, 12 – निर्मल जी संचेती, 11 – तुलसीराम जी सुराणा, 9 – सुश्री आराधना सुराणा, सुश्री जयश्री मरोठी, अठाई – सुश्री एकता कातेला, सुश्री लब्धि सुराणा, सुश्री सरोजनी सरकार, लक्ष्य जी बुच्चा, तरुण जी, गौरव जी बुच्चा, मयंक जी भूरा ने संपन्न की।

बालक-बालिकाओं का चार दिवसीय '**करें कर्मो का ज्ञान, होवे आत्मा का उत्थान**' शिविर 13 से 16 सितंबर को आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 35 बच्चों ने भाग लिया। शिविर में साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा. ने ज्ञानार्जन कराया। शिविर में 10 बच्चों ने तीन दिन तक संवर किया एवं अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान लिए।

29 सितंबर को नवरंगी कार्यक्रम में लगभग 110 जनों ने भाग लिया, जिसमें 500 से अधिक सामायिक हुई। 3 अक्टूबर को नवकार मंत्र का जाप रखा गया। अनेक बच्चों ने पटाखे जलाने का त्याग ग्रहण किया।

– आशीष बुच्चा

गंगाशहर-भीनासर। शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मास अपूर्व धर्मोद्योत के साथ गतिमान है। दैनिक धार्मिक कार्यक्रम उत्साहपूर्वक अच्छी उपस्थिति में संपन्न होते हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना पश्चात् कक्षा में श्री विनय मुनि जी म.सा. '**जैन तत्त्व निर्णय**' पुस्तक का ज्ञानार्जन करवा रहे हैं। श्री मधुर मुनि जी म.सा. अनाथी मुनि के वृत्तांत के साथ विविध विषयों पर प्रवचन फरमाते हैं। श्री विनय मुनि जी म.सा. श्रावक के 21 गुणों का सुंदर विवेचन फरमा रहे हैं। साथ ही उदयवीर व पद्मावती कथा भाग का प्रेरणादायक रोचक प्रवचन फरमाते हैं। दोपहर एवं सायंकाल प्रतिक्रमण पश्चात् ज्ञानचर्चा में अच्छी उपस्थिति रहती है।

चारित्रात्माओं की प्रेरणा से दो दिवसीय धार्मिक शिविर का आयोजन 22-23 सितंबर को किया गया, जिसमें लगभग 300 शिविरार्थियों ने भाग लेकर छह आरों का वर्णन श्रवण किया। इसी क्रम में 28-29 सितंबर को पुनः आयोजित दो दिवसीय शिविर में '**सुरक्षा कवच**' व '**नवपद की आराधना**' विषय पर 450 भाई-बहनों को ज्ञानार्जन का अवसर प्राप्त हुआ। तप प्रत्याख्यान में आदर्श जी बाँठिया के 31 उपवास पर आयोजित तप अनुमोदना कार्यक्रम में अनेक जनों ने अनुमोदना का लाभ लिया।

आसोज सुदी 2 को आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का युवाचार्य चादर प्रदान दिवस, संघ स्थापना दिवस एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का मुनि प्रवर दिवस धर्म-ध्यान, त्याग-तप के साथ मनाया गया। धर्मसभा में श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि समर्पण भाव से संघ कार्यकर्ता बनें। कुशल कार्यकर्ता संघ विकास में गौरवशाली भूमिका निभा सकते हैं।

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य दीपक के समान होते हैं। तीर्थंकरों को जैन ग्रंथों में सूर्य की उपमा दी गई है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की रोशनी हजारों दीपकों को प्रकाशित कर सकती है। आचार्य श्री नानेश ने एक मजबूत संघ का निर्माण किया है एवं आचार्य श्री रामेश ने इस संघ का पूर्ण विकास व विस्तार किया है। आप सभी आत्मनिष्ठ, संघनिष्ठ एवं गुरुनिष्ठ बनकर संघ की सेवा करें तो संघ स्थापना दिवस मनाना

सार्थक होगा। श्री प्रशम मुनि जी म.सा. ने गीतिका के माध्यम से भाव फरमाए।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधु के बताए मार्ग पर चलने वाला साधुमार्गी है। जो आचार्य भगवन् की आज्ञा शिरोधार्य करके चलेगा उसकी निर्जरा ही निर्जरा है। हमें सारे धार्मिक कार्यक्रम आचार्यश्रीजी की आज्ञा से करने हैं। संघ में उच्च भाव रखेंगे तो संघ हमेशा विकास करेगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 सुख-सातापूर्वक महिला समता भवन, शिवा बस्ती में विराजमान हैं। अनेक क्षेत्रों से दर्शनार्थियों का आवागमन जारी है। जतन देवी पटवा 31 उपवास एवं विजयराज जी सांड ने 11 उपवास किए। एकासना, आयंबिल, उपवास, बेला, तेला आदि तपस्याएँ जारी हैं।

– चंचल कुमार बोथरा

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। श्री अनंत मुनि जी म.सा., शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-6 की प्रेरणा से तपस्याओं की झड़ी लगी हुई है। **46 –** लीला देवी कोठारी, **30 –** पदमा देवी कोठारी, हेमलता जी बोरुंदिया, **10 –** ओमप्रकाश जी खींचा, राजश्री जी श्रीश्रीमाल, **9 –** रीना जी बाबेल, सीमा जी बाबेल, निकिता जी रांका, अंजलि जी लोढ़ा, अठाई, लगभग 15 तेले आदि तप के अलावा अन्य अनेक जनों की तपस्याएँ जारी हैं। सवंत्सरी के दिन लगभग 300 पौषध संवर हुए।

चारित्रात्माओं की प्रेरणा से कांकरिया देलान स्थानक में चार दिवसीय '**माउथ थेरेपी**' शिविर का समापन 21 सितंबर को हुआ। '**माउथ थेरेपी से कैसे ज्ञानवर्द्धन किया जाए**' की समझाइश के साथ वचन व्यवहार की शिक्षा भी शिविरार्थियों को दी गई। समापन पर सभी शिविरार्थियों को पारितोषिक दिया गया।

– नोरतमल बाबेल

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

जावरा। शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व धर्म-ध्यान, त्याग-तप के साथ मनाया गया। आठों ही दिवस अखंड नवकार महामंत्र जाप किया गया। पर्युषण पर्व तेला एवं अठाई महोत्सव के रूप में मनाया गया। प्रतिदिन विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। अंतकृद्दशांग सूत्र वाचन, नवाचार्यों की गौरवगाथा का विवेचन साध्वी श्री सुरचिता श्री जी म.सा. ने फरमाया।

साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. ने विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन फरमाए। चातुर्मास काल में अब तक संभव जी पगारिया, शोभना जी चौहान के मासखमण, मनीष जी जैन के 21, महक जी पगारिया 16, ग्यारह 6, नौ 9, अठाई 21, लगभग 125 तेले आदि तप हुए एवं अन्य छोटे-बड़े तप गतिमान हैं।

– राजेश संघवी

✧✧✧ छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ✧✧✧

धमतरी। शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारंभ से ही अनेकानेक धार्मिक कार्यक्रम जारी हैं। प्रार्थना पश्चात् आपश्रीजी द्वारा ज्ञानार्जन करवाया जाता है। पर्युषण पर्व के आठों ही दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन एवं अंतकृद्दशांग सूत्र का वाचन हुआ। इसी के साथ प्रश्नोत्तरी एवं विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी हुईं। संवत्सरी के दिन दोपहर में आलोयणा का वाचन हुआ। बच्चों ने छह काय विषय पर आकर्षक प्रस्तुति दी। पर्युषण पर्व के दौरान लगभग 10,000 सामायिक, 1,700 प्रतिक्रमण, 50 पौषध, 200 संवर, 250 एकासना, 500 उपवास, 60 तेला आदि हुए। सामूहिक क्षमायाचना का प्रसंग 9 सितंबर को उपस्थित हुआ, जिसमें संघ अध्यक्ष, मंत्री सहित अनेक पदाधिकारियों ने क्षमा के भाव रखे। संतवृंद ने क्षमायाचना का महत्त्व समझाया।

तपस्या की कड़ी में 33 – दिनेश जी लोढ़ा, 32 – महेश जी कोटड़िया, 31 – स्वरूप जी कोटड़िया, हर्ष जी पारख, निकेश जी कोटड़िया, गौरव जी पारख, रिया जी छाजेड़, 30 – आशा जी सांखला, पूजा जी लुणिया, बबीता जी बुरड़, कमलेश जी कोटड़िया, लीलमचंद जी सुराना, 29 – स्वीटी जी कोटड़िया के तप संपन्न हुए एवं अन्य अनेक जनों के 15, 11, 9, अठाई आदि तपस्याएँ गतिमान हैं।

– दीपक बाफना

✧ महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ✧

राहुरी फैक्ट्री। शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास में धर्म-ध्यान एवं तप-त्याग की ओर श्रावक-श्राविकाओं ने विशेष भाव प्रदर्शित किए। तपस्या के क्षेत्र में 33 – आशीष जी रांका, **मासखमण** – सुविधा लोढ़ा, 16 – वीर माता संगीता जी सोलंकी, 15 – सुनीता जी लोढ़ा, 11 – विद्या जी सोनी, सविता जी चोरड़िया, पारस जी नाहर, 9 – ललित जी चोरड़िया, कृष्णा जी कदम, मोहित जी लोढ़ा, नंदकुमार जी लोढ़ा, हर्ष जी छाजेड़, सिद्धार्थ जी छाजेड़, शुभम् जी सोलंकी, गीता जी कांकरिया, योगिता जी भंसाली, पूजा जी छाजेड़, तन्मयी जी छाजेड़, **अठाई** – नीता जी पगारिया, ममता जी छाजेड़ के अलावा 40 तेले आदि तप हुए। सामूहिक नींवी तप में 25, एकासना में 44, षट्रस तप में 36 जनों ने भाग लिया। पर्युषण पर्व में आठों ही दिन नवकार मंत्र का अखंड जाप, धार्मिक शिविर, विभिन्न विषयों पर परीक्षाएँ, आठों ही दिन संवर, पौषध, प्रतिक्रमण आदि के आयोजन किए गए।

– पारस चोरड़िया

बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, ✧ झारखंड, आंशिक ओड़िशा अंचल ✧

दिनांक 12 से 18 अक्टूबर तक सात दिवसीय अभिमोक्षम् शिविर का आयोजन भीलवाड़ा में परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में संपन्न हुआ, जिसमें बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, झारखंड, आंशिक ओड़िशा अंचल, टाटानगर एवं पूर्वोत्तर अंचल के लगभग 165 बच्चों ने अपूर्व जोश एवं उत्साह के साथ भाग लिया। इस शिविर में ऐसे भी बच्चे उपस्थित थे, जिन्होंने अपने जीवन में पहली बार आचार्य भगवन् के दर्शन किए। इन बच्चों की ज्ञान सीखने की ललक देखते ही बनती थी। अनुशासन एवं योग्यता को देखकर कुछ बच्चों को मोक्षार्थी शिविर में भेज दिया गया। शिविर की संपूर्ण व्यवस्था शिविर मैनेजमेंट टीम ने की।

– राष्ट्रीय उपाध्यक्ष,
बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, झारखंड, आंशिक ओड़िशा अंचल

उपवास, बेला, तेला आदि को ही तप मान लेते हैं पर तप इतना ही नहीं है, यह तो तप का मात्रा एक भेद है। अनशन, अवमौदर्य, वृत्ति संक्षेप, रस परित्याग, काय क्लेश, प्रतिसंलीनता, प्रायश्चित्त, विनय, वैयावच्च, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग-तप के बारह प्रकार हैं। एक वाक्य में कहें तो *'**इच्छा निरोधः तपः**'* अर्थात् इच्छाओं का निरोध ही तप है।

इच्छाओं का निरोध होने पर ही तप हो सकता है। तप करने के बाद कुछ पाने की लालसा यदि रहती है, मान-प्रतिष्ठा के भाव यदि बनते हैं तो वह तप नहीं है, निर्जरा का कारण नहीं है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

संघ विकास हेतु दृढ़ संकल्पित केंद्रीय पदाधिकारियों का बीकानेर-मारवाड़ अंचल में तीन दिवसीय सघन प्रवास

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, आंचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री एवं कार्यसमिति सदस्यों ने 27 से 29 सितंबर 2024 को बीकानेर-मारवाड़ अंचल के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवास कर संघ प्रवृत्तियों एवं आचार्य भगवन् के आयामों सहित महत्तम शिखर सम्मेलन, संघ आबद्धता, संघ आजीवन सदस्यता, इदं न मम, विहार सेवा, शिखर, महाप्रभावक व प्रभावक सदस्यता, श्रमणोपासक, अभिरामम् प्रतियोगिता, अभिमोक्षम् शिविर, समता भवन निर्माण आदि की विशेष प्रभावना की। प्रवास में विभिन्न स्थानीय संघों के अध्यक्ष, मंत्री व सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा। विगत एक वर्ष में केंद्रीय संघ ने सभी अंचलों का प्रवास पूर्ण कर किया।

इस दौरान पाटोदी में 5, चाबा में 13, बालोतरा में 12, बायतू में 4, सोमेसर में 4, सोलंकियातलां में 4 महानुभावों ने इदं न मम सदस्यता के लिए स्वीकृति प्रदान की। इस प्रकार कुल 42 सदस्य बने। सोलंकियांतला संघ द्वारा जीवदया में सहयोग प्राप्त हुआ। सोलंकियांतला एवं सेतरावा संघ में नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन एवं पाटोदी में संघ का गठन किया गया। बालेसरसत्ता, सोलंकियांतला, पाटोदी, बाड़मेर, बालोतरा, चाबा एवं सेतरावा संघ ने संघ आबद्धता ग्रहण की। केतुकलां में मुमुक्षु बहन करुणा जी गुलेच्छा के अभिनंदन तथा विभिन्न स्थानों पर चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सभी प्रवास स्थलों पर संघ विकास हेतु स्थानीय संघ के साथ विचार-विमर्श कर सहभागिता बढ़ाने हेतु प्रेरणा दी गई।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन, सान्निध्य सहित मार्गदर्शन का लाभ
- इदं न मम हेतु 42 सदस्य बने
- 1 नए संघ का गठन
- 7 संघों द्वारा संघ आबद्धता हेतु स्वीकृति

- आंचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

झूठी पकड़ का कारण होता है नादानी, अज्ञान। सद्ज्ञान हो तो व्यक्ति झूठी पकड़ को महत्त्व नहीं देता।

श्रेष्ठ कार्यकर्ता को महत्त्व की इच्छा-अपेक्षा करनी ही नहीं चाहिए।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

महत्तम शिखर ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन एक नई पहल

महत्तम शिखर महोत्सव आयोजन समिति की ओर से 21-22 सितंबर को दो दिवसीय '**ब्रेन स्टॉर्मिंग**' सेशन का आयोजन चेतना केंद्र, बेंगलुरु में किया गया। इस कार्यक्रम में श्रीसंघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के पदाधिकारियों, शिखर एवं महाप्रभावक सदस्यों सहित महत्तम टीम, टेलेंट टीम, प्रवृत्ति संयोजक सहित संघ प्रतिभाओं को आमंत्रित किया गया। इस दो दिवसीय सेशन में महत्तम शिखर के आगामी 4 माह के कार्यान्वयन पर मंथन किया गया।

मोटिवेशनल स्पीकर दीपक जी शिंदे एवं राजेंद्र जी दुधेड़िया ने अपने प्रेरणास्पद वक्तव्य में सभी को यह विचार करने पर विवश कर दिया कि क्या हमने सही मायने में महत्तम महोत्सव को महत्तम शिखर महोत्सव तक पहुँचाने में अपना 100 प्रतिशत योगदान दिया है? तीन मीटिंगों के बाद कुछ बिंदुओं को प्राथमिक स्तर पर सभी के समक्ष रखकर नए बिंदुओं को शिखर टीम तक पहुँचाने का अवसर दिया गया।

पधारे हुए सभी महानुभाव उत्साह के साथ गुरुचरणों में भेंट स्वरूप अपनी नई योजनाओं को रख रहे थे। आध्यात्मिक, सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों को विभिन्न स्तरों पर कैसे आयोजित किया जाए, इस हेतु रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

द्वितीय दिवस महत्तम शिखर के चार मुख्य बिंदुओं की प्रस्तुति के साथ ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन को एक सफल एवं नवीन आयोजन के साथ विराम दिया गया। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत सामाजिक प्रवृत्ति के स्थायी सामाजिक सेवा प्रकल्प के रूप में '**महत्तम वेलनेस सेंटर**' की जानकारी डॉ. पल्लव जी भटनागर, डॉ. रूपा जी रावत एवं डॉ. आशीष जी जैन द्वारा रखी गई। समता पाठशाला, बेंगलुरु के विद्यार्थियों ने महत्तम महोत्सव एवं अभिरामम् पर अपनी शानदार प्रस्तुति देते हुए बनाए गए मॉडल्स प्रस्तुत किए। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु ने बेहतरीन रूप से कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

- महत्तम टीम

> भगवान् ने सुपात्र दान को मोक्ष का मार्ग कहा है। इसके विपरीत कोई श्रावक अथवा सम्यग्दृष्टि को कुपात्र बतलाकर उसे दिए गए दान को अमार्ग बतलाए तो यह मार्ग में अमार्ग बुद्धि रखना है। जैसे- एक श्रमणभूत साधु की तरह आचरण करने वाला प्रतिमाधारी श्रावक प्रतिमा को साधता हुआ बेले-बेले पारणा करता है। संयोगवश वह श्रावक अपनी ग्रहण की हुई प्रतिज्ञानुसार बारह व्रतधारी श्रावक के यहाँ बेले के पारणे हेतु गोचरी के लिए जाए उस समय वह बारह व्रतधारी श्रावक प्रतिमाधारी श्रावक को अपने यहाँ आया हुआ देखकर सोचे कि मैं उत्कृष्ट सुपात्र साधु को दान देने की भावना से थाली में भोजन लेकर बैठा हूँ, वो तो नहीं आए कोई बात नहीं श्रावक भी मध्यम सुपात्र होता है। अत: श्रावक को दान देकर अपने कर्मों की निर्जरा करूँ। ऐसा सोचकर प्रतिमाधारी श्रावक को दान देने वाला श्रावक सुपात्रदान के लाभ को अर्जित करे। इस संबंध में ज्ञानीजन कहते हैं कि सुपात्रदान देता हुआ जीव कर्मों का क्षय करता है और यदि उस समय उसमें उत्कृष्ट दान देने की भावना हो जाए तो वह तीर्थंकर गोत्र का भी बंध कर सकता है।
>
> **- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.**

प्राकृत के साथ चार और भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा

नई दिल्ली। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र जी मोदी की अध्यक्षता में 3 अक्टूबर 2024 को आयोजित केंद्रीय कैबिनेट बैठक में पाँच भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने की मंजूरी दी गई। इनमें प्राकृत, पाली, मराठी, असमिया एवं बंगाली भाषाएँ शामिल हैं। पूर्व में तमिल, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम एवं ओड़िया को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता दी जा चुकी है। इसी के साथ अब 11 शास्त्रीय भाषाएँ हो जाएँगी।

मान्यता प्राप्त भाषाओं के लिए बधाई देते हुए प्रधानमंत्री ने प्राकृत एवं पाली भाषा के लिए एक्स पर पोस्ट कर लिखा, **''पाली एवं प्राकृत भारत की संस्कृति के मूल हैं। ये आध्यात्मिकता, ज्ञान और दर्शन की भाषाएँ हैं। अपनी साहित्यिक परंपराओं के लिए भी ये भाषाएँ विशेष तौर पर जानी जाती हैं। शास्त्रीय भाषाओं के रूप में इनकी मान्यता भारतीय विचार, संस्कृति और इतिहास पर उनके कालातीत प्रभाव का सम्मान करती है। मुझे विश्वास है कि मान्यता के बाद और अधिक लोग इनके बारे में जानने के लिए प्रेरित होंगे।''**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने इस हेतु माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र जी मोदी को धन्यवाद एवं आभार-पत्र प्रेषित कर बताया कि हमारा संघ परमागम रहस्यज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के मार्गदर्शन में निरंतर प्राकृत भाषा साहित्य की ओर पुरुषार्थ कर रहा है। हमारे संघ के रतलाम स्थित श्री गणेश जैन ज्ञान भंडार में दुर्लभ पांडुलिपियाँ एवं हस्तलिखित ग्रंथों का प्रभुत संकलन है, जो सभी प्राकृत भाषा में हैं। इसी के साथ संघ का उदयपुर में स्थित आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान प्राकृत भाषा में लिखित साहित्य के प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। यहाँ पर भी प्राकृत भाषा में रचित दुर्लभ साहित्य उपलब्ध हैं।

सकल जैन समाज को इस हेतु हार्दिक बधाई।

- राष्ट्रीय महामंत्री

समीक्षण ध्यान योग के शिविर विभिन्न स्थानों पर आयोजित

आचार्य श्री नानेश के अवदान समीक्षण ध्यान को जन-जन तक पहुँचाने हेतु समीक्षण ध्यान शिविर का आयोजन 3 से 5 अगस्त को चिकारड़ा, 9 से 11 अगस्त को बड़ीसादड़ी, 12 से 14 अगस्त को निकुंभ, 20 से 22 अगस्त को बीकानेर, 29 से 31 अगस्त को ब्यावर में किया गया, जिनमें शरीर की शिथिलीकरण, श्वास, देह, चैतन्य केंद्र, एवं कषाय समीक्षण सहित विभिन्न योगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया गया। दोपहर में एक्यूप्रेशर द्वारा उपचार किया गया। सभी स्थानों के प्रमुखों ने इस विशिष्ट अवदान के लिए आचार्य श्री नानेश के प्रति अहोभाव व्यक्त किए।

- डॉ. सत्यनारायण शर्मा

RRR फियेस्टा का शानदार आयोजन

भीलवाड़ा। दिनांक 3 अक्टूबर 2024 को यश विहार में समता संस्कार पाठशाला के RRR (रीयल रामेश रत्न) टीचर प्रकल्प का ग्रांड फिनाले **RRR फियेस्टा** की फाइनल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शांतिलाल जी जारोली, रोशन जी लोढ़ा, बलवंत सिंह जी रांका, अमरचंद जी दुगड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

प्रतियोगिता में पाठशाला टीचर्स की छह टीमों ने राम कृपा, रामेश, राम आनंदम्, राम रत्नम्, राम संयमी, राम आगम नामकरण के साथ प्रतिभागिता निभाई। सुबह 8 बजे आरंभ हुई यह प्रतियोगिता दोपहर में आचार्य भगवन् के सान्निध्य पश्चात् पुनः सायं 7:30 बजे से रात्रि 12 बजे तक हुई। विजेता टीम के रूप में राम कृपा टीम का चयन किया गया, जिसे ₹51,000/-, एक्टिविटी-1 विजेता राम संयमी टीम, ट्रेजर हंट विजेता राम आगम टीम, क्विज़ विजेता राम आनंदम् टीम, बेस्ट टीम रामेश, मोस्ट एक्टिव टीम राम रत्नम् को ₹21,000/- प्रत्येक टीम, बेस्ट बूस्टर प्रतिभागी के लिए साक्षी जी कांकरिया, विटू जी गुरलिया, आशा जी सुराणा, सोनू जी बोथरा, समता जी जैन, लसिका जी बाफना, बेस्ट वीडियो विजेता तोशी जी बाफना, जया जी देशलहरा, श्वेता जी धारीवाल, मोनिका जी पोरवाल, सोनू जी बोथरा, चंचल जी जैन, क्विज़ राउंड विजेता पूजा जी श्रीश्रीमाल, चंचल जी जैन, जया जी देशलहरा, सुरभि जी चोरड़िया, भावना जी सहलोत को ₹5,100/- (प्रत्येक), पिपल्स चॉइस विजेता श्वेता जी पटवा, निशि जी बंब, आर्ची जी मेहता, वीणा जी मूथा, नीलम जी बुच्चा, छवि जी जैन, रूपेश जी छाजेड़, समर्थ जी जैन को ₹500/- (प्रत्येक) पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी।

निर्णायक मंडल अल्का जी डागा, संयम जी लोसर, ध्रुव जी गोखरू ने विजेताओं का चयन किया। मुख्य अतिथिगणों एवं निर्णायक मंडल सदस्यों को स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। मुख्य अतिथियों सहित निर्णायक मंडल ने अपने भाव व्यक्त करते हुए उत्साहवर्द्धन किया।

- संयोजक, समता संस्कार पाठशाला

प्रभु ने कहा है-"**अरणक मुनि के जीवन को देखें, वे संयोग से जुड़े पर अलग भी हो गए तथा तपश्चरण से परीषहों के सहने की क्षमता अर्जित कर ली।**" वह क्षमता हमारे भीतर भी है, पर जब तक ममत्व का संयोग गहरा है तब तक आत्मबल और मनोबल दृढ़ नहीं होगा और हम छोटी-छोटी सी बात पर घबरा जाएँगे। कवि आनंदघन जी ने कहा है-"**सात महाभय टालतो, सप्तम जिनवर सेव।**" साधना के लिए उद्यत हो तो भय को दूर करो। इस प्रकार भिक्षु के विनय का स्वरूप तथा अणगार का स्वरूप, हमें एक-एक कर समझना होगा क्योंकि केवल पोशाक साधुता नहीं है। साधुता को भावधारा में ढालें तथा आत्मा में ज्ञान, दर्शन और चरित्र का पुट हो तो ही कर्म-कीटाणुओं का निरोध हो सकेगा और साधुता टिक पाएगी।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

विविध भेंट सार्फत

01 सितंबर से 30 सितंबर 2024

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है –

**** संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त) ****

50,00,000/– प्रतीक जी सूर्या, उज्जैन

30,00,000/– विजय कुमार जी टंच, बदनावर

*** संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त) ***

2,20,000/– विमलचंद जी सुराणा, गीदम

1,20,000/– जमना देवी लुणावत, नोखागाँव

1,20,000/– बसंत कुमार जी कटारिया, रायपुर

***** महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त) *****

11,00,000/– विजयचंद जी बैद, दिल्ली

7,00,000/– जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

6,00,000/– विमला जी कमल जी सिपानी, बेंगलुरु

5,00,000/– उमराव सिंह जी ओस्तवाल, मुंबई

5,00,000/– उत्तमचंद जी कोठारी, बेंगलुरु

3,00,000/– राजेंद्र कुमार जी कोठारी, बेंगलुरु

2,00,000/– अशोक कुमार जी सिपानी, चेन्नई

2,00,000/– धर्मेंद्र जी आंचलिया, बेगूँ

1,50,000/– इंद्र कुमार जी सिद्धार्थ जी सेठिया, कोलकाता

1,01,000/– हनुमानमल जी ईश्वरचंद जी भूरा, लूणकरणसर

1,00,000/– भागीचंद जी डागा, कोलकाता

1,00,000/– अशोक कुमार जी बाँठिया, दिल्ली

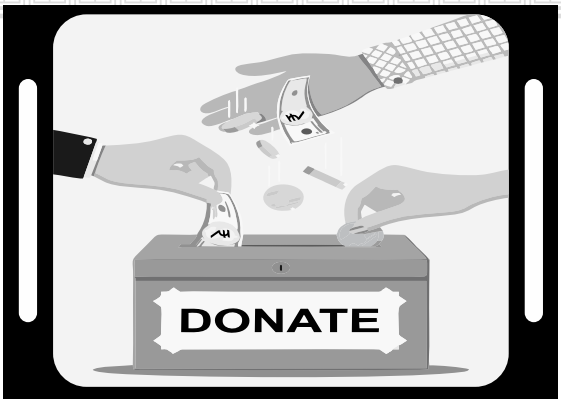

51,000/– मनीष कुमार जी सिंघवी, सिरकाली

51,000/– राजेंद्र कुमार जी मोहित जी बाँठिया, कोलकाता

51,000/– अजीत कुमार जी चेलावत, जावद

21,000/– लोकेश कुमार जी सिंघवी, सिरकाली

21,000/– सुशील कुमार जैन, हावड़ा

11,000/– अभय कुमार चोपड़ा, रतलाम

11,000/– पंकज जी सुराणा, गंगाशहर

8,900/– किरण देवी झाबक, कोलकाता

***** समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त) *****

25,00,000/– गुप्तदान

समता भवन, रायपुर

7,00,000/– अर्पित जी गौतम कुमार जी गोखरू, जयपुर

समता भवन, हावड़ा

2,00,000/– समता युवा संघ, हावड़ा

समता भवन, लूणकरणसर

50,000/– महेंद्र जी चोरड़िया, मुंबई

50,000/– सुरेंद्र जी दस्सानी, मुंबई

********** इदं न मम **********

2,200/– ललिता देवी पोखरना, बेगूँ

1,500/– पीयूष जी अहान जी मांडोत, पुणे

1,500/– प्रकाशचंद जी आंचलिया, पनवेल

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गौतमचंद जी कांकरिया, सूरत, राजकुमार जी मरोठी, नोखा, विजय जी कुशल जी नाहटा, जानेफल, गुप्तदान, बीकानेर/मुंबई, घेवरचंद जी भूरा, मुंबई, बिमला देवी किशोर जी जैन,

नागदा, नरेंद्र जी अंजू देवी कोचर, बीकानेर, छगनलाल जी माणक देवी डागा, गंगाशहर, पंकज कुमार जी जैन, जयपुर, आशीष जी मूलचंद जी बुरड़, वाण्याविहीर

1000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– नंदलाल जी ललित जी बोहरा, चिकारड़ा, अजीत जी कांकरिया, सूरत, लादूलाल जी चंडालिया, कपासन

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– मधु जी शीतल कुमार जी भानावत, उदयपुर, चांदमल जी गौरव जी छल्लानी, बनमनखी, रत्नेश जी आशीष जी अंशुल जी चेलावत, निम्बाहेड़ा

******* दानपेटी योजना *******

10,030/– धुड़मल जी माणकचंद जी डागा, बेंगलुरु
5,100/– दिनेश जी गोल्डी जी सुराणा, रायपुर
4,000/– रीता जी अजीत ललवानी, बांसवाड़ा
3,100/– लाभचंद जी कावड़िया, मुंबई
2,500/– भोजराज जी वैभव जी श्रीश्रीमाल, रायपुर
2,500/– धर्मचंद जी जितेंद्र जी श्रीश्रीमाल, मोहला
2,500/– मनोज जी चोपड़ा एवं राजेश जी भंडारी, अंजड़
2,200/– महेंद्र जी प्रणय जी रोहित जी गोलछा, रायपुर

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पदमचंद जी कमलेश जी नाहटा, रायपुर, संजय जी श्रीश्रीमाल, मोहला, विकास जी संभव जी श्रीश्रीमाल, मानपुर

1,721/– विमल जी लोढ़ा, अंजड़
1,700/– कमल जी लोढ़ा, अंजड़
1,500/– गुप्तदान, मोहला
1,350/– गौतम जी लुंकड़, अंजड़

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पुखराज जी जैकी जी संचेती, रायपुर, संजय जी धाड़ीवाल, रायपुर, **मानपुर से–** गंभीरमल जी हर्ष जी बाफना, उत्तमचंद जी प्रकाशचंद जी लोढ़ा, अगरचंद जी गौरव जी ढेलड़िया, प्रेमचंद जी ऋषभ जी चोरड़िया, दिनेश जी रितिक जी चोरड़िया, अजय जी अनिल जी चोरड़िया, दीपेश जी समन्वय जी जैन, राजकुमार जी पारख

1,080/– विजय जी भंडारी, अंजड़
1,000/– कमल जी लुंकड़, अंजड़
511/– लालचंद जी भंडारी, भामेसर
501/– मूलचंद जी आशीष जी बुरड़, वाण्याविहीर

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गुप्तदान, गंगाशहर, मुन्नालाल जी जयंत जी सेठिया, रायपुर, सचिन जी आरव जी बाफना, रायपुर, विजय जी चोपड़ा, तलवाड़ा, **मानपुर से–** लक्ष्मीचंद जी चोरड़िया, सुभाषचंद जी नवरतन जी बाफना, मुकेश कुमार जी सेठिया, सुभाषचंद जी इंद्रचंद जी संचेती

******* जीवदया *******

11,000/– रूपेश जी दीप्ति जी सृष्टि जी जैन, कोटा
5,100/– अमोलकचंद जी खुशालचंद जी छाजेड़, बीड़
5,100/– महेश जी सुराणा, अंबागढ़ चौकी
5,100/– दिनेश कुमार जी सौरभ जी जैन, जयपुर
5,100/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखागाँव
5,000/– सुंदर बाई वैद्य, बालाघाट
3,100/– पदम जी डोशी, फारबिसगंज
3,000/– दीपक जी अमित जी जैन, भीलवाड़ा
2,500/– सूरज देवी मुणोत, बड़ीसादड़ी
2,401/– मूलचंद जी मुकेश जी छाजेड़, साजा

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– हस्तीमल जी मनीष जी अर्पित जी चंडालिया, मंदसौर, मेहता परिवार, रावटी (श्री सागरमल जी हीराचंद जी मेहता की पुण्यस्मृति में), इंद्रेश जी कोचर, नई दिल्ली, अनिल कुमार जी प्रतीक जी नागोरी, छोटीसादड़ी

2001/– निर्मला जी लोढ़ा, मुंबई
2000/– जानकी बाई, रतलाम
1700/– गुप्तदान, सिरपुर
1500/– गुप्तदान, अलीपुर
1111/– ललित जी पारख, ढेकियाजूली

1100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गुप्तदान, गुप्तदान, नोखा, गुप्तदान, बीकानेर/मुंबई, मस्तराम जी मीना, रावल, कमला बाई सुगनमल जी सुराणा, वरला, गुप्तदान, दिल्ली, प्रेमलता जी कीर्ति जी मोदी, खैरागढ़, बाबूलाल जी सुखलाल जी कोठारी, आमेट, पारसमल

जी सुराणा, नारायणपुर, पूनमचंद जी खटोड़, गुडली (श्री भैरूलाल जी वरदीचंद जी खटोड़ की स्मृति में), ज्योतिबाला जी दुगड़, जलगाँव, नवरतन जी महेंद्र जी मिन्नी, भीनासर (गवरा देवी पानमल जी मिन्नी के शीलव्रत प्रत्याख्यान पर), प्रदीप कुमार जी सेठिया, कोलकाता

1000/– गुप्तदान, उदासर

501/– श्री जैन संघ, साजा

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– चांदमल जी गौरव जी छल्लानी, बनमनखी, गुप्तदान, गुप्तदान, आमेट, गुप्तदान, कोलकाता, रत्नेश जी आशीष जी अंशुल जी चेलावत, निम्बाहेड़ा, मोतीलाल जी कांतिलाल जी दुगड़, चालीसगाँव (विशांत जी कोटड़िया के 36 की तपस्या पर), प्रकाशचंद जी पीयूष कुमार जी चोरड़िया, मुंबई, गवरा देवी पानमल जी मिन्नी, भीनासर, **नारायणपुर से–** आनंदमल जी सुराणा, जवरीलाल जी चोरड़िया, बंशीलाल जी गिरीश कुमार जी श्रीश्रीमाल, हेमंत जी भंडारी

******** संघ सहयोग ********

21,000/– ईश्वरचंद जी पटवा, सिलचर (शिल्पा पुत्री लहरचंद जी पटवा संग पुखराज पुत्र स्व. श्री सूरजमल जी डागा, नोखा के शुभविवाह पर)

21,000/– अनिल जी मनोज जी नवीन जी देशलहरा, दुर्ग

**** समता साहित्य स्टॉल अनुदान ****

21,000/– ललिता जी राजेश जी रांका, मुंबई

11,000/– रीता जी अजीत जी ललवानी, बांसवाड़ा

5,100/– अनोखीलाल जी कटारिया, रतलाम

5,100/– समता युवा संघ, मुंबई

5,100/– उम्मेद जी सांखला परिवार, दुर्ग (श्री प्रेमराज जी बिदामी देवी सांखला की पुण्यस्मृति में)

5,000/– निर्मल जी नेमीचंद जी खिंवेसरा, ब्यावर

5,000/– विजय जी हितेश जी खिंवेसरा, जयपुर

5,000/– दुलहराज जी शांतिलाल जी रांका, जयनगर/मुंबई

5,000/– रिखबलाल जी पोखरना, भूपालसागर

5,000/– चंद्रकांता जी मेहता, भीलवाड़ा

4,500/– मंजू जी नवीन जी रांका, भीलवाड़ा

3,100/– हेमराज जी हर्षित जी बनवट, मूंदी

2,500/– गुप्तदान, मंदसौर

2,500/– केशरीमल जी जैन, देवातु

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सौभागमल जी मंगल कुमार जी मुणत, रतलाम, अशोक कुमार जी जैन, रावल, प्राचीश्री जी परिवार, बदनावर, संजय कुमार जी हितेश कुमार जी बाफना, बदनावर

******** समता प्रचार संघ ********

21,000/– पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़

7,100/– अशोक कुमार जी लुणावत, विशाखापट्टनम

4,000/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, नगरी

1,100/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, निमगुल (पर्युषण पर्व सोत्साह मनाने के उपलक्ष्य में)

**** साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग ****

9,000/– गिरीश जी चावला, उदयपुर

6,000/– सुंदर बाई वैद्य, बालाघाट

1,100/– माणक देवी गोलछा, गंगाशहर

*** समता सरिता सेवा (विहार सेवा) ***

5,000/– विजय जी हितेश जी जैन, जयपुर

2,500/– पोकरचंद जी केशरीमल जी जैन, देवातु

2,100/– भैरूदान जी गुलाबचंद जी बोथरा, गंगाशहर

2,000/– दीपक जी अमित जी जैन, भीलवाड़ा

1,100/– गुप्तदान, बीकानेर/मुंबई

1,100/– किशनलाल जी डागा, बीकानेर

***** समता संस्कार पाठशाला *****

5,000/– श्वेता जी चेतन कुमार जी जैन, दूनी

2,000/– सौरभ जी नगरीवाला, प्रतापगढ़

1,100/– गुप्तदान, बीकानेर/मुंबई

******** श्रमणोपासक भेंट ********

1,500/– अशोक कुमार डूंगरवाल, निम्बाहेड़ा

****** धर्मपाल प्रचार-प्रसार ******

1,100/– जितेश जी चोरड़िया, दिल्ली

❊❊❊ सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति) ❊❊❊

21,000/- समता महिला मंडल, सूरत

2,100/- जितेश जी चोरड़िया, दिल्ली

1,000/- सुनीता जी तुषार जी बरमेचा, उलुंदुरपेट

❊ श्री कन्हैयालाल मूलावत शिक्षा दीक्षा निधि ❊

5,100/- चितरंजन कुमार जी परेश जी नांदेचा, खाचरौद (राजकुमारी जी नांदेचा के 21 उपवास लोच सहित करने के उपलक्ष्य में)

:: **विशेष** ::

श्रमणोपासक सदस्यता-13, साहित्य सदस्यता-3, संघ आजीवन सदस्यता-2, संघ साधारण सदस्यता-9, महिला समिति सदस्यता-2, समता युवा संघ सदस्यता-1

:: 1 अप्रैल 2024 से 30 सितंबर 2024 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नं. 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/-	UPI सिद्धार्थ
04.04.24	500/-	नकद
04.04.24	12,000/-	UPI रौनक
04.04.24	7,000/-	UPI रौनक
06.04.24	1,000/-	UPI आदित्य जैन
07.04.24	2,500/-	UPI शरत
12.04.24	501/-	UPI विपुल जैन
19.04.24	1,100/-	UPI विकास
19.04.24	1,000/-	NEFT अशोका रेजीडेंसी
29.04.24	3,256/-	UPI राजेश
07.05.24	13,000/-	UPI NAKES
13.05.24	5,100/-	नकद
14.05.24	1,100/-	UPI सिंपल
14.05.24	800/-	UPI सचिन
07.06.24	4,000/-	NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो
10.06.24	21,000/-	By Trf.
12.06.24	2,100/-	UPI पारसमल जैन
19.06.24	2,960/-	UPI रचना
01.07.24	3,133/-	IMPS
20.07.24	3,800/-	UPI महेंद्र इलेक्ट्रिकल्स
01.08.24	3,133/-	UPI विमल कुमार
02.08.24	1,000/-	UPI सुशील संजय जैन
12.08.24	2,375/-	UPI प्रदीप कुमार जैन
16.08.24	2,100/-	TRF
17.08.24	11,000/-	UPI युनाइटेड प्लास्टिक
20.08.24	38,500/-	UPI NK श्री निगसन
31.08.24	25,500/-	UPI उत्तम ट्रैडर्स
04.09.24	1,101/-	UPI ईश्वर जैन
10.09.24	2,100/-	UPI अर्चना मनीष सिंघी
12.09.24	31,000/-	NEFT उज्ज्वल जैन
12.09.24	51,500/-	UPI सुनील मेहता
18.09.24	8,000/-	UPI रंजना
18.09.24	5,000/-	UPI निकुंज शाह
19.09.24	6,000/-	NEFT राजेंद्र क्लॉथ
20.09.24	9,000/-	UPI ऋषभ जैन
27.09.24	51,000/-	IMPS ऋषभ
27.09.24	5,000/-	UPI जयंत
27.09.24	45,000/-	UPI जयंत

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेंद्र!

भावभीनी श्रद्धांजलि

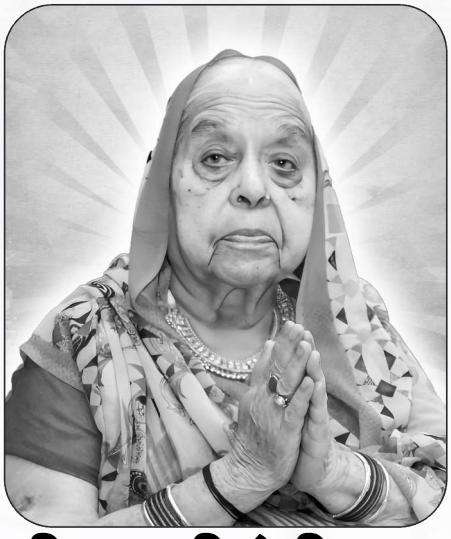

सुश्राविका श्रीमती अणची देवी डागा, नोखा/अहमदाबाद

धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती अणची देवी डागा धर्मपत्नी स्व. श्री उदयचंद जी डागा, नोखा/अहमदाबाद का **90 वर्ष** की आयु में **दिनांक 3 अक्टूबर 2024** को अहमदाबाद में निज निवास में स्वर्गवास हो गया। आपकी प्रबल भावना रहती थी कि अंतिम समय में संथारा ग्रहण करूँ। अतः परिजनों ने आपकी प्रबल भावना को साकार करते हुए आचार्यश्रीजी की परोक्ष आज्ञा लेकर प्रातः 7:40 बजे आपको संथारे के प्रत्याख्यान दिला दिए तथा प्रातः 8:30 बजे आपका संथारा सीझ गया।

आप लगभग 55 वर्षों से चौविहार व्रत, जमीकंद का त्याग, प्रतिदिन पाँच सामायिक एवं नित्य प्रतिक्रमण व्रत आदि का पालन कर रही थीं। आपने लगभग 45 वर्ष की आयु में आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के मुखारविंद से नोखा में शीलव्रत का प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवार संघ व शासन समर्पित परिवार छोड़कर गई हैं। आपको अपूर्व पुण्यवानी से अपनी तीसरी पीढ़ी पड़पौत्र के दशोटन तथा स्वर्ण सीढ़ी आरोहण का लाभ प्राप्त हुआ।

:: श्रद्धानवत ::

अशोक-ममोल देवी डागा (पुत्र-पुत्रवधू), किरण देवी चौधरी, धनराज जी पींचा, विमला देवी-कमलचंद जी सेठिया, मंजू देवी-मूलचंद जी सेठिया (पुत्री-दामाद), नितेश-आस्था, विवेक-मनीषा (पौत्र-पौत्रवधू), विनीता-दिनेश जी, पूजा-महर्षि जी (पौत्री-दामाद), निर्वाण (पड़पौत्र) एवं झंवरलाल, पुखराज, प्रकाश, महावीर एवं समस्त डागा परिवार, गांधी चौक, नोखा ।

Udaichand Ashok Kumar Daga, Gandhi Chawk, Nokha, Bikaner (Raj.)

Honest Ply King Pvt. Ltd., Ahmedabad (Guj.) 9376129128

भावभीनी श्रद्धांजलि

सुश्राविका श्रीमती पाना देवी भूरा, देशनोक

सुश्राविका श्रीमती पाना देवी भूरा धर्मपत्नी स्व. श्री ईशरचंद जी भूरा का **दिनांक 14 अक्टूबर 2024** को निधन हो गया। आपने अपने संपूर्ण परिवार को संस्कारों की धरोहर प्रदान कर समाज सेवा एवं धर्म के मार्ग पर अग्रसर किया। आपका परिवार लगभग 40 वर्षों से लूणकरणसर में व्यवसायरत है। आपकी उत्कृष्ट भावना थी कि लूणकरणसर में समता भवन का निर्माण हो। आपकी भावना ने उस समय साकार रूप लिया जब 25 अक्टूबर 2019 को समता भवन हेतु शिलान्यास संघ प्रमुखों सहित आपके करकमलों से एवं 12 मई 2024 को समता भवन का भव्य लोकार्पण हुआ। इस समता भवन में नीचे के प्रवचन हॉल के निर्माण में आपके परिवार द्वारा भी सहयोग दिया गया।

आपने अपने जीवनकाल में 1 से 11 एवं 11 से 1 की लड़ी, अनेकानेक तेला, बेला, पाँचों तिथि का सौगंध, लगभग 50 वर्षों से रात्रि चौविहार के प्रत्याख्यान एवं हरी सब्जी व जमीकंद का त्याग आदि से जीवन सजाया हुआ था। प्रतिदिन पाँच सामायिक करने का लक्ष्य रखती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

:: श्रद्धानवत ::

हनुमानमल (पुत्र), संजय कुमार, सुनील कुमार, मुकेश कुमार (पौत्र), पल्लव, वेदांत, खुशाल भूरा (प्रपौत्र) एवं समस्त भूरा परिवार, देशनोक, हाल निवासी लूणकरणसर, बीकानेर (राज.)

विनम्र श्रद्धांजलि

मैसूर। सुश्रावक विकास जी सुपुत्र प्रकाशचंद जी वया का 9 अगस्त को संथारा सहित महाप्रयाण हो

गया। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के मुखारविंद से आपने पूर्ण चेतन अवस्था में संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। आपने उपवास, बेला, तेला, पाँच आदि तपों से जीवन सजाया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बगुमुंडा। सुश्राविका सावित्री देवी धर्मपत्नी स्व. श्री नानूराम जी जैन का 81 वर्ष की आयु में 16 अगस्त को

देहावसान हो गया। आप अत्यंत ही धार्मिक, सरल स्वभावी एवं मिलनसार व्यक्तित्व की धनी थीं। त्याग-प्रत्याख्यान, उपवास, व्रत, प्रतिदिन सामायिक आदि करने का नियम आपने स्वास्थ्य की अनुकूलता रहने का तक निभाया। आप साध्वी श्री रजतमणि जी म.सा. की संसारपक्षीय भाभीजी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

अकोला। सुश्राविका मांग बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मीठालाल जी हींगड़ का 88 वर्ष की आयु में 25 अगस्त को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी थीं एवं देव, गुरु, धर्म पर पूर्ण आस्था रखती थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश पर अनन्य श्रद्धा थी। आप प्रतिदिन 7 से 8 सामायिक करती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

उदयपुर। सुश्रावक धर्मचंद जी देरासरिया का 95 वर्ष की आयु में 20 की तपस्या में तिविहार संथारे

के प्रत्याख्यान एवं मासखमण पर चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण कर कुल 42 दिन तप-त्याग के साथ 15 सितंबर को महाप्रयाण हो गया। आप साध्वी श्री सुमनप्रभा जी म.सा. के संसारपक्षीय बड़े पिताजी थे। राजनैतिक क्षेत्र के साथ आप धार्मिक क्षेत्र में भी अग्रणी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

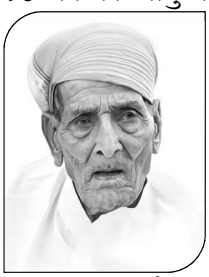

मनेंद्रगढ़। सुश्रावक गणेशमल जी पुत्र स्व. श्री नथमल जी दुगड़ का 75 वर्ष की आयु में 18 सितंबर

को देवलोकगमन हो गया। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के परम भक्त थे। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। नित्य 2-3 सामायिक करने का लक्ष्य रखते थे। आपने स्थानीय संघ में विभिन्न पदों पर सेवाएँ दीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

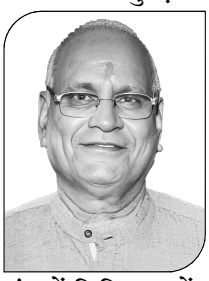

दिल्ली/देशनोक। सुश्रावक विमलचंद जी सुपुत्र स्व. श्री आनंदमल जी संचेती का 55 वर्ष की आयु में

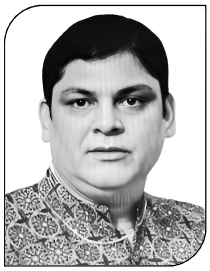

21 सितंबर को देवलोकगमन हो गया। आप संत श्री हृषिकेश मुनि जी म.सा. के संसारपक्षीय चचेरे भाई थे। आप आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान आचार्य श्री रामेश के परम भक्त थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

देशनोक। सुश्रावक शांतिलाल जी सुपुत्र स्व. श्री नेमचंद जी गुलगुलिया का 23 सितंबर को

देहावसान हो गया। आप धर्म-ध्यान व चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नोखामंडी। सुश्राविका बसंती देवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामलाल जी कांकरिया का 23 सितंबर को

देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति गहरी आस्था व समर्पणा थी। आपका जीवन धर्म-ध्यान, त्याग-तप से सजा हुआ था। आपने वर्षीतप सहित 9, दो अठाई, पंचोला सहित अनेक तपाराधनाएँ कीं। सभी से स्नेह, वात्सल्य भरा व्यवहार एवं सरल मन आपकी विशिष्ट पहचान थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

कुसुमकसा। सुश्रावक प्रकाशचंद जी कुचेरिया

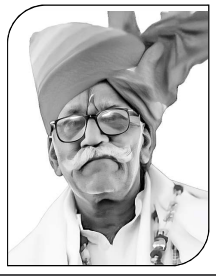

का 74 वर्ष की आयु में 26 सितंबर को देहावसान हो गया। आपने भीलवाड़ा में गुरुचरणों में अंतिम श्वास ली। आप सरलता, प्रेम एवं करुणा से ओत-प्रोत थे। धर्मध्यान में विशेष रुचि के साथ आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के परमभक्त थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बिलासपुर। सुश्रावक शांतिलाल जी सुपुत्र स्व. श्री माणकलाल जी धाड़ीवाल, देशनोक निवासी,

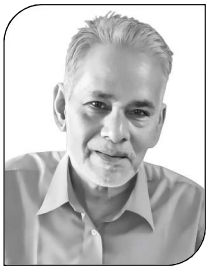

बिलासपुर प्रवासी का 30 सितंबर को निधन हो गया। आप अत्यंत ही सरल स्वभावी एवं धर्मनिष्ठ सुश्रावक थे। देव, गुरु, धर्म के प्रति समर्पित रहते हुए आप चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

कुसुमकसा। सुश्रावक किशनलाल जी कोटड़िया का 76 वर्ष की आयु में 9 अक्टूबर को देहावसान हो

गया। धर्म-ध्यान में अग्रणी रहते हुए आपने गुरु समर्पणा को सर्वोपरि रखा। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण श्रद्धावान थे। यथा अवसर चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लक्ष्य रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

शहादा। सुश्राविका विमल बाई धर्मपत्नी केसरीमल जी बैदमूथा, महसावद निवासी का 75 वर्ष

की आयु में तिविहार संथारे सहित 10 अक्टूबर को महाप्रयाण हो गया। शहादा में चातुर्मासार्थ विराजित शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा. की अनुज्ञा से श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. एवं श्री अनन्य मुनि जी म.सा. के मुखारविंद से 8 अगस्त को तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए गए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

चिंतन की कड़ियाँ

हिम्मत हम धारें अंतर् भाव से

हिम्मत से सारी कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं। हिम्मत हार जाने पर छोटी-सी कठिनाई भी पहाड़ बन जाती है। उसे पार करना दुरूह हो जाता है। हिम्मत को कैसे बनाएँ? यह एक प्रश्न है। व्यक्ति के सामने दो मार्ग होते हैं- **हराम का** और **ईमान का**। हराम के मार्ग पर चलने वाला ऊपर से साहसी हो सकता है, पर उसकी भावना पवित्र नहीं हो सकती, जिससे आंतरिक स्थिति हिम्मती नहीं बन सकती। ईमान के मार्ग पर चलने से ऊपरी तौर पर व्यक्ति साहसी, हिम्मती नजर आए या न आए, पर उसका अंतर् अत्यंत सुदृढ़ होता है। उसे कोई हिला सके यह कठिन है। ऊपर से वह व्यक्ति नरम होता है, पर भीतर से बहुत मजबूत होता है। वह जैसा चाहता है वैसा होता है। उसकी चाह और राह अलग-अलग नहीं होती। जैसी चाह होती है राह भी उसकी वैसी ही होती है, उसी से वह सफल हो पाता है। उसकी सफलता का राज भी यही है कि वह जैसा सोचता है उसी पर काम करता है। उसके जीवन में छल-छद्म की झलक भी मिलना कठिन है। उसकी सच्चाई सबके दिल को छू जाती है, जिससे स्वतः उसकी बात सबको सुहाने लगती है। लोग मन से उसे अपना नेता स्वीकार कर लेते हैं। वह नेता बनने का इच्छुक नहीं होता, पर उसका व्यवहार ही उसे ऊँचाइयाँ देने वाला बन जाता है। उसके कार्य में आत्मविश्वास होता है। सफलता की अनुगूँज होती है। उसी से उसकी हिम्मत बरकरार रहती है। आनंद आदि श्रावकों की जीवन झरमर इसका स्पष्ट उदाहरण है। (उपांशु)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की संगठन प्रवृत्ति के अंतर्गत दिनांक 1 अक्टूबर 2024, मंगलवार को '**जिया कब तक उलझेगा**' नामक वेबिनार का आयोजन किया गया। हुबली निवासी **दीपा जी कटारिया** ने बहुत ही प्रभावशाली तरीके से दैनिक जीवन में प्रसन्न रहने के सुझाव दिए। साथ ही **'A journey of Self-transformation'** के माध्यम से घर, परिवार एवं आपसी व्यवहार के उलझते संबंधों को सुलझाने की राह दिखाई। **'My Life My Responsibility'** को फोकस करते हुए समझाया गया कि भावनात्मक रूप से स्वस्थ व्यक्ति से स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। लाइफ पिरामिड के माध्यम से जीवन चक्र एवं संबंधों को बहुत ही सुंदर तरीके से समझाया गया। वेबिनार के अंत में प्रश्नों के समाधान बहुत ही रोचक तरीके से उदाहरण द्वारा समझाकर दिए गए। वेबिनार से जुड़ने वाले सदस्यों ने आगे भी इसे एक सीरीज़ के रूप में लाते रहने के लिए अनुरोध किया।

युवती शक्ति

युवती शक्ति में इस बार 14 अगस्त से 8 सितंबर 2024 तक संपूर्ण राष्ट्र में संवर दिवस (A Night of Bliss) करवाने का आह्वान किया गया, जिसमें सभी अंचल से युवतियों ने समता भवन/स्थानक में धर्म-ध्यान का ठाठ लगाते हुए संवर की आराधना की। अगले माह पुन: संवर आराधना करवाने का लक्ष्य रहेगा।

युवती शक्ति जयंती बाई श्रमणोपासिका विशेष : युवतियों को जोड़ने का प्रयास करते हुए युवती शक्ति अंचल संयोजिका स्वयं के भी आध्यात्मिक और कार्मिक विकास की ओर अग्रसर है। इस त्रैमासिक गतिविधि में जयंती बाई श्रमणोपासिका पुरस्कार पूर्वोत्तर अंचल संयोजिका जयश्री जी दस्सानी को मिला।

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

इसके अंतर्गत '**गोल सेटिंग**' नामक नई गतिविधि तमिलनाडु अंचल द्वारा आयोजित की गई। लक्ष्यविहीन मनुष्य का जीवन उस नौका के समान है जिसका कोई खेवैया नहीं है। इस विषय को बहुत ही सुंदर तरीके से समझाया गया। इसकी अगली गतिविधि जयपुर-ब्यावर अंचल के लिए होनी संभावित है, जिसका विषय रहेगा – '**Who am I?/मैं कौन हूँ?**

केसरिया कार्यशाला

केसरिया कार्यशाला में श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्र की चौथी दशा में वर्णित आचार्य की आठ संपदाओं पर आधारित रोचक गतिविधि करवाई। अगस्त और सितंबर माह की संयुक्त केसरिया कार्यशाला '**मति संपदा**' पर आधारित थी। मति संपदा के विषय में उदाहरणों सहित समझाकर विस्तृत जानकारी दी गई। गतिविधि में पाँच इंद्रियों से संबंधित छोटी-छोटी प्रतियोगिताएँ करवाई गईं, जिनमें लगभग 1,700 श्राविकाओं ने भाग लिया। अगली केसरिया कार्यशाला प्रयोग मति संपदा पर आधारित होनी संभावित है।

धार्मिक कार्य

तप–त्याग

:: मेवाड़ अंचल ::

भीलवाड़ा	**51 –** किरण जी हिंगड़, **31 –** ममता जी ओस्तवाल, **30 –** विजयश्री जी लालाणी, करिश्मा जी मारू।
निम्बाहेड़ा	**15 –** मधु जी गांग, कविता जी मोदी।
वल्लभ नगर	**31 –** नीलम जी पोखरना, **17 –** अर्चना जी सुराणा।
उदयपुर	**31 –** दुर्गा बाई मेहता, **30 –** चंचल जी गोलच्छा, पिंकी जी मेहता, **15 –** भावना जी।
बड़ीसादड़ी	**40 –** अंजू जी लोढ़ा, **31 –** सुधा जी मेहता, मीना जी रांका, **30 –** प्रमिला जी मेहता, **16 –** आयुषी जी नलवाया, **15 –** आँचल जी कोठारी।

:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::			
नोखामंडी	**101** – हेमलता जी बाँठिया (गतिमान), **41** – प्रेरणा देवी संचेती, **31** – सुशीला देवी भूरा, **15** – गुड़िया जी संखलेचा।		
गंगाशहर	**31** – तारा देवी जी सेठिया, **16** – शकुंतला देवी सोनावत, **15** – जागृति जी लुणावत।		
सोमेसर	**61** – वीरा जी दुग्गड़ (गतिमान), **37** – रवीना जी दुग्गड़, **31** – मनीषा जी छाजेड़।		
दुर्गावता	**15** – प्रिया जी रायसोनी, कीर्ति जी रायसोनी, पूजा जी रायसोनी।		
जोरावरपुरा	**15** – करिश्मा जी कुंभट।	**देशनोक**	**28** – कुमकुम जी बोथरा (गतिमान)।
:: जयपुर-ब्यावर अंचल ::			
ब्यावर	**30** – हेमलता जी बोरुंदिया।	**जयपुर**	**31** – रुचि जी बैद।
:: छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ::			
दुर्ग	**59** – सुनंदा जी पारख।	**बालोद**	**30** – दिव्या बाफना।
अर्जुनी	**21** – कांता जी टांटिया।	**राजनांदगाँव**	**15** – सारिका जी बाफना।
:: कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ::			
हैदराबाद	**30** – श्वेता जी पितलिया, पिंकी जी बुच्चा, **15** – सेजल जी पितलिया।		
:: मुंबई-गुजरात अंचल ::			
अहमदाबाद	**91** – सुरेखा जी बाफना, **37** – सुमन जी बोहरा (गतिमान), **35** – ममता जी पालगोता, **31** – शांति बाई श्रीश्रीमाल, शकुंतला जी लोढ़ा, संगीता जी छाजेड़, **30** – केनी बेन शाह, **16** – सीमा जी संचेती, अंजू जी बाघमार, वृषिका जी शाह।		
मुंबई	**15** – रीना जी चौरड़िया।	**पुणे**	**16** – नंदिनी जी बैदमूथा।
सूरत	**31** – मंजू जी चौरड़िया, जयश्री जी गाँधी, संगीता जी लालाणी, **21** – नैना जी कोठारी, **15** – अनिता जी कोठारी, तमन्ना जी बुच्चा, पूजा जी भूरा।		
:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::			
धुलिया	**15** – बादाम बाई बंब।		
:: बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, झारखंड, आंशिक ओड़िशा अंचल ::			
कोलकाता-हावड़ा	**31** – मोनिका जी भूरा, **15** – प्रीति जी बाँठिया।		
:: पूर्वोत्तर अंचल ::			
गुवाहाटी	**32** – रंजीता जी कांकरिया, **17** – विनीता जी डागा, **16** – सरस्वती जी बेताला, **15** – डिंपल जी बोथरा, लक्ष्मी जी कांकरिया, माही जी कोठारी, संजना जी भूरा।		
:: दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल ::			
दिल्ली	**41** – सरिता जी मुकीम, **30** – तनीषा जी हीरावत, **15** – निशा जी नवलखा।		

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	6 आरे का वर्णन	गंगाशहर	शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा.
2.	परवरिश व मार्गानुसारी के 35 गुण	बड़ीसादड़ी	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.
3.	संयम समुत्थान	हैदराबाद	शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा.
4.	खाली हाथ आओ भर के जाओ, आओगे तो पाओगे	निम्बाहेड़ा	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा.
5.	ज्ञान में छोटी-छोटी बातें हैं अनमोल, लगाएँ जिनशासन का रंग सीखें जीवन जीने का ढंग	बालोद	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.
6.	कर्म थ्योरी, छोटा ज्ञान बड़ा परिणाम, एक ताले की दो चाबी	दिल्ली	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.
7.	मोक्ष को कर लो मुट्ठी में	चित्तौड़गढ़	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा.
8.	व्यक्तित्व कला का निखार, माँ तेरे जैसा कोई नहीं, आस्था व आराध्य, सादा जीवन उच्च विचार, जीवन लक्ष्य क्या हों, संकल्प और विकल्प, बेटियाँ रत्न की पेटियाँ, भाई-भाई का प्यार, प्रेम बिना प्रभु भी नहीं मिलते	कांकरोली	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.
9.	मेरे प्रभु, हम प्रभु के अनुयायी	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला श्री जी म.सा.
	करे पाप होने का अफसोस, अहोदुखम्		शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्या श्री जी म.सा.
10.	शुद्ध से सिद्धि की ओर	बंबोरा	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा.
11.	पूर्वोत्तरीय समता संस्कार	गुवाहाटी	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.
12.	समवसरण	अहमदाबाद	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा.
13.	अहोज्ञानम्	मुंबई	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म.सा.
14.	थोकड़ों का सफर	सूरत	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा.
15.	पधारो म्हारे देश	दुर्ग	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसारिका श्री जी म.सा.
16.	जंबूद्वीप का थोकड़ा	अर्जुनी	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.
17.	जैन इतिहास व भूगोल	रायपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.
18.	अहोदर्शनम् और समवसरण	नागपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमेरु श्री जी म.सा.

केंद्रीय पदाधिकारियों का मुंबई-गुजरात अंचल प्रवास संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय पदाधिकारियों का 18-20 सितंबर तक तीन दिवसीय मुंबई-गुजरात अंचल के 10 क्षेत्रों का प्रवास सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। प्रवासी दल में अंचल उपाध्यक्षा, केसरिया कार्यशाला संयोजिका, मोटिवेशनल फोरम अंचल संयोजिका भी शामिल थे।

सभी प्रवास स्थलों पर महिला समिति द्वारा संचालित प्रवृत्तियों, शिविरों, अभिरामम् आनंदम् गतिविधि में रजिस्ट्रेशन आदि की प्रभावना की गई। स्थानीय महिला मंडलों ने राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के कार्यान्वयन पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। सामायिक, प्रतिक्रमण, श्री दशवैकालिक सूत्र के 1 से 3 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का 11वाँ एवं 31वाँ अध्ययन, अन्य थोकड़ों की जानकारी तथा स्तवन आदि कंठस्थ करने पर 6 वर्षीय नन्हीं बालिका टीआ नागौरी का प्रतीक चिह्न देकर विशेष सम्मान किया गया।

समिति की आजीवन सदस्यता 16 महिलाओं ने ग्रहण की एवं 2 नई बहुओं का स्वागत किया गया। बारडोली एवं वलसाड में प्रवृत्ति संयोजिका की नियुक्ति की गई। अनेक क्षेत्रों में परिवारांजलि स्टिकर प्रदान किए गए। सूरत एवं अहमदाबाद महिला मंडल द्वारा सहयोग राशि प्रदान की गई।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

॥ जय गुरु नाना॥ ॥ जय महावीर॥ ॥ जय गुरु राम॥

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

अंतर्गत : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)

परीक्षा कार्यक्रम : दिसंबर 2024 समय : दोपहर 12 से 4 बजे

प्रारंभिक व वैकल्पिक परीक्षाओं की समय सारिणी

दिनांक	परीक्षा का नाम	प्रश्न-पत्र
06/12/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	प्रथम-पत्र
08/12/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	द्वितीय-पत्र
10/12/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	तृतीय-पत्र
12/12/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	चतुर्थ-पत्र
14/12/2024	जैन आगम कंठस्थ भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
15/12/2024	जैन स्तोक - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
16/12/2024	राष्ट्र भाषा - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
17/12/2024	जैन संस्कृत - प्राकृत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-

नोट :- 1. आप सुविधानुसार परीक्षा केंद्र ले सकते हैं।

2. परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी अपना आवेदन समता भवन, बीकानेर कार्यालय में 5 नवंबर 2024 तक अनिवार्यत: जमा करावें।

3. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 7231933008

विविध समाचार

सूरत। शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सानिध्य में 11 से 30 वर्ष तक की आयु-वर्ग के तरुण युवक-युवतियों का एक दिवसीय **'VISION'** शिविर 6 अक्टूबर को आयोजित किया गया, जिसमें 103 तरुणों ने भाग लिया। साध्वीवर्या ने फरमाया कि हमें वही कार्य करना है जो हमारे लिए लाभदायक हो। हमें यही सोचना है कि हमारे पास जो है, वह पर्याप्त है। ऐसा सोचने से हमारा 'VISION' पारदर्शी रहेगा और हमेशा 'Luxury Life' की अनुभूति होती रहेगी।

पूर्वोत्तर अंचल प्रवास संपन्न – श्रीसंघ के राष्ट्रीय मंत्री, समता युवा संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय सामाजिक संयोजक एवं कार्यकारिणी सदस्य आदि ने पूर्वोत्तर अंचल के करीमगंज, पथारकांदी, लाला बाजार, बदरपुर क्षेत्र का एक दिवसीय प्रवास 15 अक्टूबर को किया। इस दौरान सभी प्रवास स्थलों पर महत्तम महोत्सव, इदं न मम, दानपेटी, अभिरामम् रजिस्ट्रेशन, रक्तदान शिविर आदि की प्रभावना की गई। पथारकांदी में समता युवा संघ का गठन एवं लाला बाजार में पुनर्गठन किया गया।

भीलवाड़ा। समता युवा संघ, भीलवाड़ा के तत्त्वावधान में डॉ. श्रेणिक जी नाहटा, दुर्ग द्वारा 6 अक्टूबर को आयोजित निःशुल्क दंत चिकित्सा शिविर में 108 व्यक्ति लाभान्वित हुए।

प्रतियोगिता

भगवन् का जीवन, हमारा आदर्श

देश के अनेक स्थानों में विचरण व चातुर्मास आदि विविध प्रसंगों पर परम पूज्य आचार्य भगवन् के सान्निध्य का लाभ प्राप्त हुआ है। इस दौरान अनेक सुश्रावक-सुश्राविकाओं को आचार्य भगवन् के जीवन को नजदीक से जानने-समझने का अवसर मिला। यदि आपके ध्यान में आचार्य भगवन् के जीवन, जीवन चारित्र, संघीय व्यवस्था, श्रावक-श्राविकाओं संबंधी कुछ विशेष घटनाएँ या संस्मरण हों, जो आपने प्रत्यक्ष देखे हों तो उन्हें अपने शब्दों में पिरोकर हमें भिजवाने का कष्ट करें। साथ ही यह भी अंकित करें कि आप द्वारा लिखित संस्मरण से हमें क्या शिक्षा मिलती है एवं यह संस्मरण आचार्य भगवन् की कौनसी विशेषता को उजागर करता है। आप द्वारा भेजा गया विवरण यथाशीघ्र ही हमें प्राप्त हो सके, ऐसा लक्ष्य रखें।

सारगर्भित शब्दांकन, सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित एवं शब्द रचना में जिन श्रावक-श्राविकाओं की रचनाएँ सर्वश्रेष्ठ होंगी उन्हें विजेता के रूप में **प्रथम ₹1100/-**, **द्वितीय ₹700/-**, **तृतीय ₹500/-** एवं **सांत्वना (पाँच) ₹251/-** के पुरस्कार से सम्मानित किया गए जाएँगे। आपका यह सार्थक प्रयास अन्यों के लिए प्रेरक होगा।

- श्रमणोपासक टीम

महत्तम महोत्सव में रम जाना है, इसे महत्तम बनाना है

अब तक दादी, पापा, मम्मी, पिंकी और बबलू की चर्चा से हमने महत्तम महोत्सव की सोच, शुभारंभ और टीम गठन के बारे में समझा। आइए, समझते हैं कि महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 9 प्रवृत्तियाँ कौन-कौनसे प्रकल्प लेकर आई हैं।

मम्मी - जहाँ तक मैं याद कर पा रही हूँ हमारे परिवार से हर कोई महत्तम के किसी न किसी प्रकल्प से जुड़ा ही था।

बबलू - मैं भी जुड़ा था मम्मी?

पिंकी - मुझे तो अच्छे से याद है कि '**अब कर कमाल 2.0**' से ही मैंने हुक्मगच्छ के 9 आचार्यों की जीवन गाथा पढ़ी थी, जिसमें सभी आचार्य भगवन् की जीवन यात्रा को बताते हुए Interesting Activity के माध्यम से हमने Revision भी किया था।

दादी - एकदम सही पिंकी, तुम्हारी मम्मी ज्ञानार्जन, स्वाध्याय, तप-त्याग, व्रत-विवेक के प्रकल्पों से, मैं स्वाध्याय के प्रकल्पों से, पिंकी संस्कार और बबलू छोटा होते हुए भी सकारात्मक संस्कार प्रभावना के छोटे-छोटे नियमों से जुड़कर हम सब महत्तम महामहोत्सव का हिस्सा बने।

बबलू - और पापा, पापा तो इतने Busy रहते हैं, वे तो जुड़ ही नहीं पाए होंगे।

पापा - यही तो Special बात थी, बबलू। सामाजिक प्रवृत्ति के अलग-अलग प्रकल्प जो हमारी Community Service से जोड़ते हैं, उनमें मैं हमेशा ही सहभागी बना।

बबलू - अब तो मुझे बहुत Excitement हो रहा है। दादी मुझे महत्तम के सभी प्रोग्राम के बारे में जल्दी से बताओ ना।

दादी - आगम, तत्त्व, थोकड़ों का जिस प्रवृत्ति से ज्ञान होगा ऐसी प्रवृत्ति को ज्ञानार्जन का दिया नाम।

प्रकल्प 1 - कर्म तत्त्वज्ञ - श्रावक वर्ग को लक्षित करते हुए इस प्रकल्प को बनाया गया है। इस प्रकल्प का उद्देश्य ज्ञान का अर्जन करते हुए कर्म प्रज्ञप्ति के प्रशिक्षक तैयार करना है।

प्रकल्प 1.2 - श्रुत आरोहक (3 वर्षीय पाठ्यक्रम) - इस 3 वर्षीय पाठ्यक्रम में आगम, तत्त्व एवं थोकड़े आदि के आधार पर 3 वर्षों में कोर्स के माध्यम से परीक्षा ली गई।

प्रकल्प 1.3 - ऑल इज वेल - 18 से 45 वर्ष तक के युवा श्रावकों को विधि सहित प्रतिक्रमण कंठस्थ करवाना।

प्रकल्प 1.4 - श्रुत भ्रमण (घर बैठे ओपन बुक परीक्षा) - 31 महीने की अवधि में तीन बार चातुर्मास काल में घर बैठे ओपन बुक परीक्षा आयोजित की गई। आगार, अणगार धर्म (जिणधम्मो), कर्म प्रज्ञप्ति (अध्याय 1-14) क्रमश: इन सभी विषयों पर ओपन बुक परीक्षा आयोजित की गई।

प्रकल्प 1.5 - 20 थोकड़े का कार्निवल - आगमों का सार हैं थोकड़े। इन्हीं सारगर्भित थोकड़ों की ज्ञानवर्धक और रोचक एक्टिविटीज के माध्यम से तैयारी करवाने का लक्ष्य रखा गया है। जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक, अंतक्रिया का थोकड़ा आदि थोकड़ों का समावेश था।

प्रकल्प 1.6 - श्रुत रमण - जिनवाणी को जीवन में उतारने का सर्वोत्तम मार्ग हैं आगम। जिनशासन की धरोहर इन आगमों के हिंदी अर्थ का वाचन है श्रुत रमण।

21 महीनों की अवधि में 23 आगमों के अर्थ का वाचन करना है।

- श्रीमद् आचारांग सूत्र- 1-2
- श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र
- श्रीमद् ज्ञाताधर्मकथा
- श्रीमद् अनुयोगद्वार सूत्र
- श्रीमद् निरयावलिका सूत्र (श्रीमद् कल्पावतंसिका, श्रीमद् पुष्पिका, श्रीमद् पुष्पचूलिका, श्रीमद् वृष्णिदशा)
- श्रीमद् नंदी सूत्र
- श्रीमद् विपाक सूत्र
- आवश्यक सूत्र
- श्रीमद् अनुत्तरौपपातिकदशा
- श्रीमद् अंतकृद्दशांग सूत्र
- श्रीमद् उपासकदशांग सूत्र
- श्रीमत् सूत्रकृतांग सूत्र
- श्रीमत् समवायांग सूत्र
- श्रीमत् प्रश्नव्याकरण सूत्र
- श्रीमद् औपपातिक सूत्र
- श्रीमद् राजप्रश्नीय सूत्र
- श्रीमद् जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र
- श्रीमत् स्थानांग सूत्र
- श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र

यदि चित्त चंचल होकर संयोग की ओर दौड़ रहा है और अंकुश भी नहीं है तो वैसी स्थिति में सुकुमारता का त्याग कर आतापना लो। आतापना से मनोबल दृढ़ होगा। मनोबल की दृढ़ता से परीषहों के उपस्थित होने पर भी व्यक्ति घबराता नहीं है। संयोग से जुड़ना और रहित होना केवल मुनि के लिए ही नहीं कहा जा रहा है, जहाँ-जहाँ भी संयोग का प्रसंग है उन सभी स्थितियों के संदर्भ में कहा जा रहा है। गृहस्थ दशा में रहते हुए सम्यग्दृष्टि के लिए कहा गया है -

अहो समदृष्टि जीवड़ा, करे कुटुंब प्रतिपाल।
अंतर्गत न्यारो रहे, ज्युं धाय खिलावे बाल।।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे **WhatsApp No. 9799061990** पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं अथवा QR Code स्कैन कर अपनी जानकारी Google Form द्वारा भरकर हमें भिजवाने का कष्ट करें।

-श्रमणोपासक टीम

संघ समर्पण महोत्सव एवं 62वाँ वार्षिक अधिवेशन सोत्साह संपन्न

भीलवाड़ा। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. महिला समिति एवं श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ का वार्षिक अधिवेशन दिनांक 2 से 4 अक्टूबर को संपन्न हुआ। इस अवसर पर '**संघ विकास - सर्वांगीण विकास**' विषय पर संयुक्त बैठक, महत्तम शिखर सम्मेलन, संयुक्त वार्षिक अधिवेशन, वार्षिक आमसभा एवं संघ सहित सहयोगी शाखाओं की कार्यकारिणी बैठक आदि सहर्ष संपन्न हुए। देशभर से हजारों गुरुभक्तों ने इस अवसर पर पहुँचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर जीवन धन्य बनाया।

(विस्तृत समाचार आगामी अंक में)

- श्रमणोपासक टीम

साधुमार्गी पब्लिकेशन से जुड़ें

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रवचन, चिंतन, कथा, कहानी एवं अन्य विविध विधाओं पर अब तक लगभग 340 से अधिक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस धार्मिक साहित्य के अध्ययन, पठन एवं मनन से अवश्य ही आपका जीवन परिवर्तित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। आप इन साहित्यों के लिए दिए गए QR Code, लिंक https://sadhumargi.com/sangh-activities/sahityikpravartiyan/ पर जाकर एवं मोबाइल नं. 8209090748 पर कॉल करके संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

सुधी पाठकों से निवेदन!

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक के 62 वर्ष के सफर में अनेक अवसरों पर विविध विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन किया गया है। इन विशेषांकों में विषय संदर्भित सामग्री को प्रमुखता से प्रकाशित करने के साथ-साथ धर्म-ध्यान, तप-त्याग संबंधी विषय सामग्री को भी प्राथमिकता देते हुए प्रकाशित किया गया है। पठनीय, सारगर्भित एवं रुचिकर सामग्री होने से अनेक गणमान्य पाठकों ने इसकी प्रतियाँ संजोकर रखी हैं। चूँकि समय-समय पर संदर्भ के रूप में इन विशेषांकों की आवश्यकता होती है तो बहुत से स्थानों पर इन विशेषांकों की प्रतियाँ भेजी जाती हैं, जिसके कारण केंद्रीय कार्यालय में इनकी बहुत ही अल्प प्रतियाँ संरक्षित हैं। आप सुधी पाठकों से निवेदन है कि यदि आपके पास इन विशेषांकों की प्रतियाँ सुरक्षित रखी हों तो उन्हें केंद्रीय कार्यालय - **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, जैन कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)** को भिजवाने का कष्ट करें। इस विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए आप **संपर्क सूत्र 9799061990** पर संपर्क कर सकते हैं। आपकी जानकारी के लिए विशेषांकों की सूची इस प्रकार है -

क्र.सं.	विशेषांक का नाम	प्रकाशन वर्ष
1.	आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. शताब्दी विशेषांक	20 सितंबर 1976
2.	समता विशेषांक	25 अगस्त 1978
3.	बाल विशेषांक	25 सितंबर 1979
4.	धर्मपाल विशेषांक	10 मार्च 1984
5.	रजत जयंती विशेषांक	25 सितंबर 1987
6.	संयम साधना विशेषांक	25 मार्च 1990
7.	युवाचार्य विशेषांक	10 दिसंबर 1992
8.	दीक्षा विशेषांक	मार्च 1992
9.	गणपतराज जी बोहरा विशेषांक	अगस्त 1999
10.	आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक	10 व 25 अक्टूबर 2000
11.	साध्वी श्री इंदर कँवर जी म.सा. विशेषांक	20 फरवरी 2012
12.	स्वर्ण जयंती विशेषांक	20 नवंबर 2012
13.	युवाचार्य पदारोहण विशेषांक	20 सितंबर 2017

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

महाप्रयाण

हे धर्म पुरुष!
हे दानवीर!

हे सरल मानव!
हे तपस्वी!

हमारे श्रद्धानिष्ठ, परोपकारी, दयालु, दानवीर, कर्मनिष्ठ, धर्मनिष्ठ सुश्रावक

श्री धर्मचंद जी देरासरिया, देवगढ़ (95 वर्ष)

(सुपुत्र स्मृतिशेष श्री चंदनमल जी-श्रीमती गेहरी बाई देरासरिया)
स्मृतिशेष श्रीमती धापु बाई देरासरिया (धर्मसहायिका)

आपश्री विगत 16 वर्षों से देवगढ़ चिकित्सालय में रोगियों व परिजनों के लिए निःशुल्क भोजन सेवा कर रहे थे। 95 वर्ष की आयु में निरंतर तपस्या भाव, श्रावक के तीसरे मनोरथ की ओर आरूढ़, 21वें उपवास में तिविहार संथारा, संथारे के 10वें दिन (मासखमण पर) चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान ग्रहण कर

42वें दिन संथारा संलेखना पूर्वक दिनांक 15 सितंबर 2024 को **देवलोकगमन** हो गया।

:: श्रद्धानवत ::

स्मृतिशेष : मिश्रीलाल जी, सोहनलाल जी, सुवालाल जी (भ्राता), कंचन बाई-धर्मचंद जी चावत (बहन-बहनोई), शांतिलाल, बाबुलाल, प्रकाशचंद, रमेश कुमार (भ्राता), मूली बाई (भाभी), प्रेम-ललिता, सुरेश-सुशीला, आजाद-कमला, राकेश-संगीता (पुत्र-पुत्रवधू), कमला-स्व. बापुलाल जी कोठारी, विमला-नानालाल जी कोठारी, सुनीता-विनोद जी कोठारी, अंजना-चंदन जी लसोड़ (पुत्री-दामाद), मूलचंद, नेमीचंद, मनोहरलाल, कैलाशचंद, अशोक, सुभाषचंद, सुनील, गौतम, उत्तमचंद, ललित, आशीष, भीकमचंद, गौतम, कपुरचंद, राजेश, राकेश, मुकेश (भतीजा), पीयूष-सरिता, आदित्य-निधी, विमल-मोनिका, अमित-शिल्पा, रितेश-साक्षी (पौत्र-पौत्रवधू), कौस्तूब, गौरव (पौत्र), प्रियंका-रचित जी मेहता, निकिता-यशपाल जी गड़िया (पौत्री-दामाद), अंकिता, झील (पौत्री), वैदिक, लक्ष्य, युनय, खुशी, शिविका, हिरल, युविका (पड़पौत्र, पड़पौत्री), रेणु-सुनील जी अलावत, शिल्पा-पवन जी लसोड़ (दोहिती-दामाद), दिनेश कोठारी-मधु, पंकज-ज्योति, अभिषेक-रेणु, मनीष-अंजलि, अमित-सुमन कोठारी (दोहिता-दोहितावधू), रीनल, जेमी, कश्वी, देवांश, प्रखर (दोहिता, दोहिती) एवं समस्त देरासरिया परिवार, देवगढ़-ब्यावर-उदयपुर-मुंबई।

ससुराल पक्ष माणकचंद जी, राजमल जी, बालचंद जी, शांतिलाल जी, महावीर जी, मनोहर जी, विकास जी, पीयूष जी, पुखराज जी, विनय जी एवं समस्त **दक परिवार**, बरार-देवगढ़-मुंबई-बैंगलुरु।

फर्म जयश्री गार्इंडिंग मिल्स, ब्यावर • एस.एस. मिनरल्स, देवगढ़ • जय भारत इंपेक्स, मुंबई • ऋषभ अर्थमूवर्स, उदयपुर

धापु बाई धर्मचंद देरासरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, देवगढ़

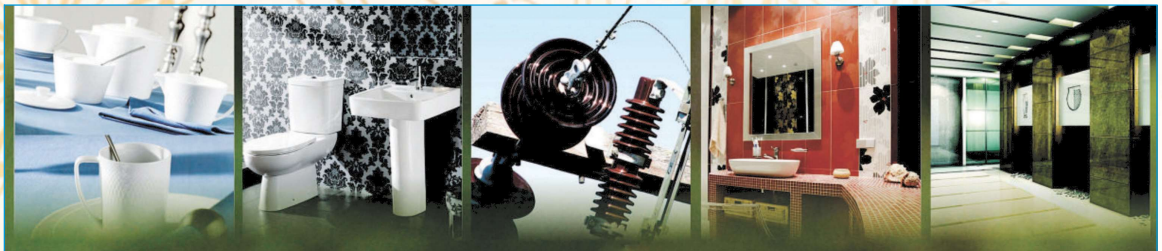

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

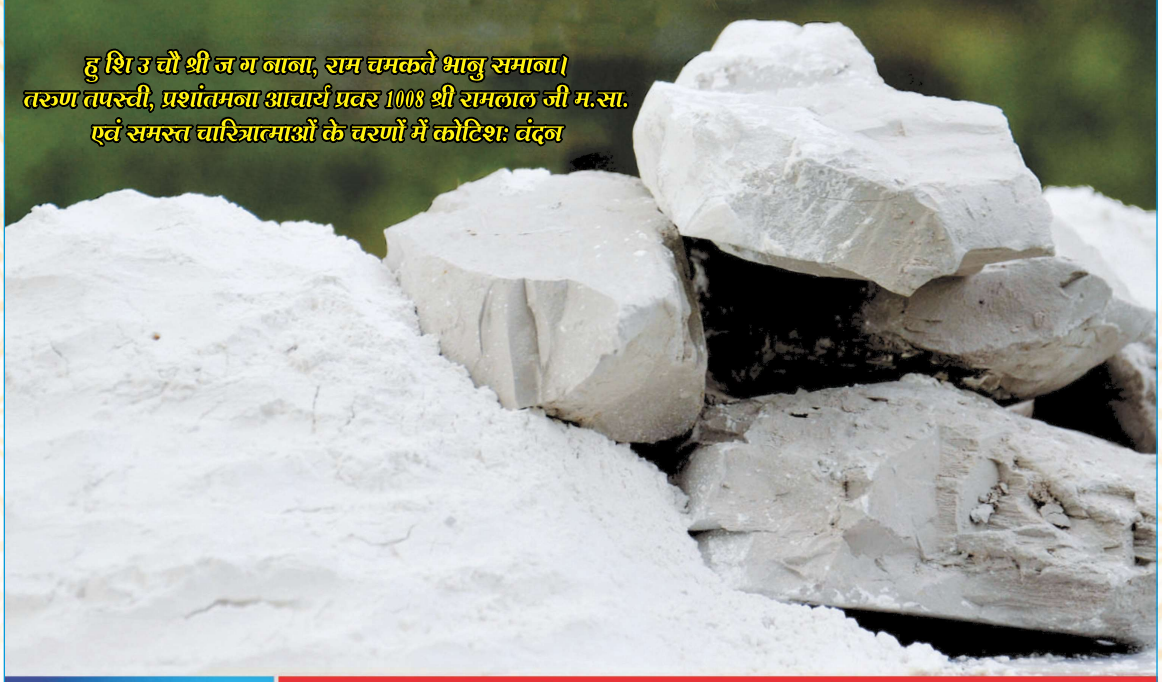

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इसका उद्घाटन फरवरी 2025 से पहले होना संभावित है।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	: 7231933008	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261